चन्दामामा
मार्च १९७१
75 P

लज़्ज़तदार
मज़ेदार
ठंडा मीठा
पारले
एक्स्ट्रा-स्ट्राँग
पिपरमिण्ट
एक पैकेट में ९ पिपरमिण्ट—
कितनी कम कीमत पर!
मज़ेदार तरोताज़ा—
तरोताज़ा मज़ेदार
Gold Star
Peppermint
PARLE
everest/982/PP hin

# चन्दामामा

मार्च १९७१

# कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की दुर्गंध रोकिये... दंतक्षय का दिन भर प्रतिकार कीजिये!

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल ख़त्म कर देता है और कोलगेट विधि से खाना खाने के तुरंत बाद दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का— अधिक दंतक्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह एक बेमिसाल घटना है। क्योंकि एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेन्टल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंतक्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है। केवल कोलगेट के पास यह प्रमाण है। इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है— इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं।

COLGATE

COLGATE DENTAL CREAM

ज़्यादा साफ़ व तरोताज़ा सांस और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लिए... दुनिया में अधिक लोग दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही खरीदते हैं!

G. 41 HN

भारत
की
सर्वप्रथम
बाल पॉकेट बुक्स
ज्ञान भारती
बाल पॉकेटबुक्स
के सजिल्द पुस्तकालय संस्करण ✻
भी अब उपलब्ध हैं !
पहला सेट
•तेनाली राम के लतीफ़े
•जंगल का आदमी
•सम्राट की कहानी
•गधा चला गंधर्व नगर को
•पुतली कथा
•एक था राजा
दूसरा सेट
•कोड़े की करामात
•पाताल लोक की यात्रा
•तेनालीराम के नये लतीफ़े
•चाँद ज़ादी
•कुबड़े की कहानी
•दैत्य की बेटी
प्रत्येक पुस्तक 1/-रु.
तीसरा सेट
•चार चोर चौरासी बनिये
•कुर्सी का रहस्य
•नेता जी ने खाई मात
•लोहे का दानव
•वीर पाण्डिय
•और फिर
चौथा सेट
•गप्पें
•माया देश का रहस्य
•भाग्य का खेल
•तीन राजकुमारियाँ
•फ़र्राटी खाँ
•व्यास जी ने कहा था
छठा सेट
•बाल महाभारत
•अमरशहीद ऊधमसिंह
•होन हो
•माया देश का रहस्य भाग-३
•हाजी बाबा भाग-२
•साहसी बालक
पाँचवां सेट
•बर्फ़ की देवी
•माया देश का रहस्य भाग-२
•हाजी बाबा
•गोपाल भाँड़ के लतीफ़े
•कहानी चार ख़रगोशों की
•तीन छैल की नगरी
ज्ञान भारती (च)
घरेलू बाल पुस्तकालय (योजना)
विशेश्वरनाथ रोड, लखनऊ

# Ensure Your Success

With

**GLOBE**

ACCURACY

Other Famous Brands of Geometry Boxes by **KASHYAPS**

**DELTA, KOH-I-NOOR, HORSE**

Mfg. **G. S. KASHYAP & SONS** Pataudi House, Darya Ganj, Delhi-6

---

जापान माडल

# किश्तों में ट्रांज़िस्टर
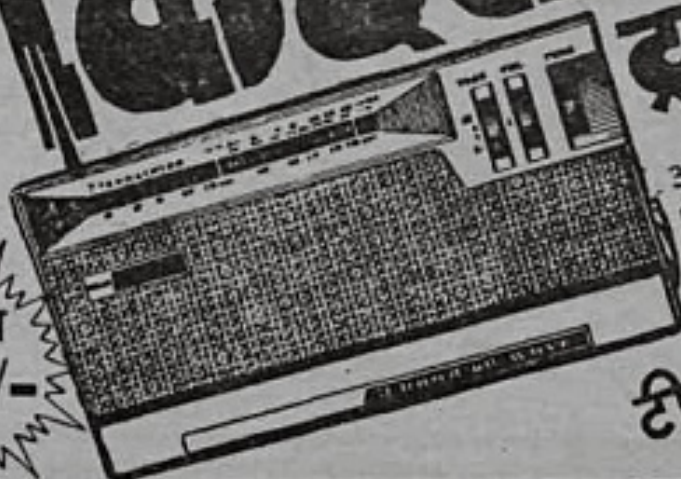
(गारंटीड)

३ बैन्ड आल वर्ल्ड पोर्टेबल
सिर्फ ५/- महीने की किश्त
पर हर शहर व गांव में
पत्र लिख कर मंगायें।

**टीटा एजेन्सीज (CM)**
कमला नगर दिल्ली-७

मूल्य
165/-

फॉस्फ़ोमिन से

- बल और उत्साह बढ़ता है
- भूख बढ़ती है
- अधिक काम करने की शक्ति प्राप्त होती है
- शरीर की रोगप्रतिरोध–क्षमता बढ़ती है

SQUIBB
SARABHAI CHEMICALS

® ई. आर. स्क्विब एण्ड सन्स इन्कॉर्पोरेटेड का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है। सारामचन्द प्रेमचन्द प्राइवेट लि. को इसे उपयोग करने का लाइसेन्स प्राप्त है।

फलों के ज़ायकेवाला,
हरे रंग का विटामिन
टॉनिक — फॉस्फ़ोमिन

Shilpi HPMA-36A/70 हिंदी

**इलाहाबाद बैंक**

Chiclets
Chiclets
Chiclets
Chiclets
Chiclets

**Statement about ownership of CHANDAMAMA (Hindi)**
**Rule 8 (Form IV), Newspapers (Central) Rules, 1956**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | *Place of Publication* | : | 'CHANDAMAMA BUILDINGS'<br>2 & 3, Arcot Road,<br>Vadapalani, Madras-26 |
| 2. | *Periodicity of Publication* | : | MONTHLY<br>1st of each calendar month |
| 3. | *Printer's Name* | : | B. V. REDDI |
| | *Nationality* | : | INDIAN |
| | *Address* | : | Prasad Process (Pvt) Ltd.,<br>2 & 3, Arcot Road, Vadapalani,<br>Madras-26 |
| 4. | *Publisher's Name* | : | B. VISWANATHA REDDI |
| | *Nationality* | : | INDIAN |
| | *Address* | : | Managing Partner,<br>Sarada Binding Works,<br>2 & 3, Arcot Road, Vadapalani,<br>Madras-26 |
| 5. | *Editor's Name* | : | CHAKRAPANI (A. V. Subba Rao) |
| | *Nationality* | : | INDIAN |
| | *Address* | : | 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani,<br>Madras-26 |
| 6. | *Name & Address of individuals who own the paper* | : | SARADA BINDING WORKS:<br>PARTNERS<br>1. Sri B. Viswanatha Reddi,<br>2. Sri B. L. N. Prasad,<br>3. Sri B. Venugopal Reddi,<br>4. Sri B. Venkatrama Reddy,<br>5. Smt. B. Seshamma,<br>6. Smt. B. Rajani Saraswathi,<br>7. Smt. A. Jayalakshmi,<br>8. Smt. K. Sarada. |

I, B. Viswanatha Reddi, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

B. VISWANATHA REDDI
*Signature of the Publisher*

1*st March* 1971

चन्दामामा
संचालक: चक्रपाणी
इस अंक से 'शिवपुराण' के चित्र अंतिम पृष्ठ पर प्रकाशित करने जा रहे हैं। "गुप्त व्यक्ति" (बेताल कथा) में सबको काम देनेवाली एक नीति है। हम लोग यह सोचकर भ्रम में पड़ जाते हैं कि धन अथवा पद के कारण जो लोग बड़े बनते हैं, उनमें बड़प्पन होता है, मगर वास्तव में मनुष्यों का बड़प्पन या छोटापन उनके स्वभाव में होता है।
वर्ष : २३ मार्च १९७१ अंक : ७
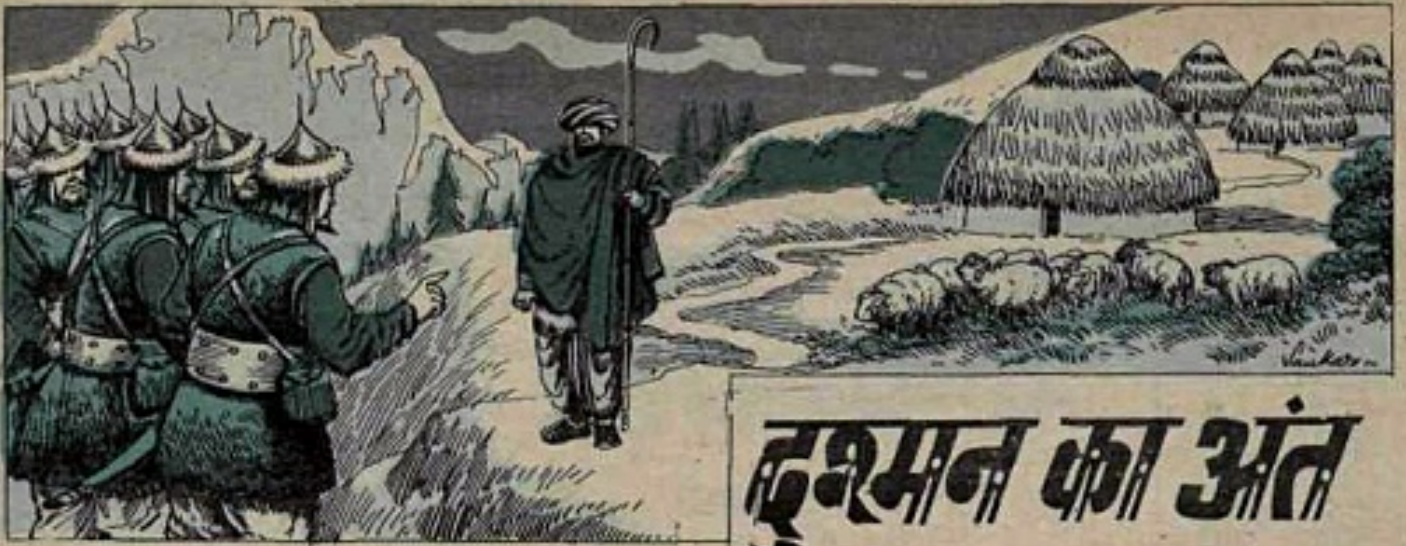
# दुश्मन का अंत

एक जमाना था, जब कामरूप और नेपाल देशों के बीच गहरी दुश्मनी थी। कामरूप देश के सिपाही दल बांधकर नेपाल की सीमा में जाते और वहाँ के गाँवों को लूटकर लौट जाते।

एक बार कामरूप के बीस सिपाही सीमा पार कर पहाड़ी रास्ते से नेपाल में पहुँचे। उनको मालूम हो गया था कि नेपाल के एक गाँव में एक बड़े अमीर के घर शादी होनेवाली है। मगर उन्हें यह मालूम न था कि वह गाँव कहाँ पर है और वहाँ तक कैसे पहुँचना है।

इतने में उन्हें एक पहाड़ी तलहटी में एक गड़रिये की झोंपड़ी दिखाई दी। उसमें एक गड़रिया अकेले रहा करता था। कामरूप के सिपाहियों ने झोंपड़ी के पास जाकर उससे पूछा—"फलाना गाँव कहाँ है, तुम जानते हो?"

"हाँ, मैं जानता हूँ।" गड़रिये ने जवाब दिया।

"आज उस गाँव के एक अमीर के घर शादी हो रही है, क्या यह सच है?" सिपाहियों ने फिर पूछा।

यह बात लुटेरों को मालूम हो गयी थी, इस पर परेशान होते हुए गड़रिये ने कहा—"हाँ, सच है।"

"हम उस गाँव में जाना चाहते हैं, हमें रास्ता मालूम नहीं। क्या तुम हमें रास्ता दिखाओगे?" सिपाहियों ने कहा।

"मैं तुम लोगों को रास्ता बता सकता हूँ।" गड़रिये ने जवाब दिया। मगर वह वास्तव में उन्हें गुमराह करना चाहता था।

"यह सब नहीं चलने का। तुमको हमारे साथ चलना होगा।" सिपाहियों ने उसे धमकी दी।

राधाकृष्ण चौबे

"भेड़ों के जन्म देने का समय निकट आया है। मैं इन्हें छोड़ नहीं जा सकता।" गड़रिये ने समझाया।

"अरे, तुम्हारे सुख-दुखों से हमें क्या मतलब है? हम आदेश देते हैं कि तुमको हमारे साथ चलना होगा।" सिपाहियों ने कहा। गड़रिये को मालूम हो गया कि ये सिपाही उसे यूँ ही न छोड़ेंगे। इन सिपाहियों के उस गाँव में जाने के बदले उसका खुद मर जाना ठीक होगा। मगर उसे मारने के बाद भी ये सिपाही यूँ ही अपने देश को लौट नहीं जायेंगे। पहाड़ों पर कोई न कोई आदमी उन्हें मिल जायगा। ये लोग देश की हानि करके ही लौटेंगे। इसलिए गड़रिये ने निश्चय कर लिया कि उनकी खबर उसे खुद लेनी है।

गड़रिये ने सिपाहियों से कहा–"अगर आप लोग ज़ोर देते हैं कि मुझे साथ चलना है, मैं चलने को तैयार हूँ। लेकिन शादी आधी रात के क़रीब ही शुरू होगी। मुहूर्त के पहले जाने से तुम लोगों के हाथ कुछ नहीं लग सकता। तुम लोगों को देख डरकर कोई भी मेहमान न आवेगा, शायद शादी रुक सकती है। इसलिए हम लोग अंधेरा फैल जाने के बाद निकलेंगे। यहाँ से सिर्फ़ दो-तीन घड़ियों का रास्ता ही तो है।"

गड़रिये की सलाह सिपाहियों को ठीक जंची। वे लोग अंधेरा फैलने तक

गड़रिये की झोंपड़ी में रहे। रसोई बनाकर खाना खाया।

अंधेरा फैल गया। ओस भी गिरने लगी। एक मशाल हाथ में लेकर गड़रिया आगे-आगे चलने लगा। उसके पीछे कामरूप के सिपाही चल पड़े।

गड़रिया सभी पहाड़ी रास्तों से वाक़िफ़ था। उनमें कुछ रास्ते बड़े ही खतरनाक थे। कुछ रास्ते पहाड़ी के आंचल से होकर जाते हैं तो कुछ रास्ते पहाड़ी के आंचल तक जाकर बंद हो जाते हैं। ऐसे रास्ते में से चलनेवाला थोड़ा सटकर चले या आंचल को पारकर क़दम बढ़ावे, तो गहरी खाई में गिर जाता है।

गड़रिया एक पहाड़ी आंचल के रास्ते पर चला। उसके पीछे चलनेवाले कामरूप के सिपाहियों को सिवाय मशाल के कुछ दिखाई न देता था। गड़रिया पहाड़ी आंचल तक पहुँचा, एक पेड़ की डाल पकड़ कर निचली घाटी की ओर झुका और अपने मशाल को घाटी की ओर बढ़ाया। उसकी चाल चल निकली। सर्दी ज़ोर की पड़ रही थी। तेज़ी से चलनेवाले सिपाहियों को ओस के कारण ठीक से कुछ दिखाई न देता था। इसलिए वे सब एक के पीछे एक घाटी में गिर गये। आखिर में आनेवाले एक-दो सिपाहियों को ज़बर्दस्ती गड़रिये ने घाटी में ढकेल दिया।

दुश्मन के सभी सिपाहियों के घाटी में गिर जाने के बाद गड़रिया शादीवाले घर में पहुँचा और सारी कहानी सुनायी। उसकी बातों पर पहले किसी ने यक़ीन नहीं किया। दूसरे दिन कुछ लोग गड़रिये के साथ घाटी में पहुँचे, कामरूप के सिपाहियों के शव देखने के बाद उन्हें विश्वास करना पड़ा।

इस भयंकर खतरे से शादी को बचाने के कारण उस घर के लोगों ने गड़रिये को पुरस्कार दिया। कुछ दिन बाद नेपाल के राजा ने उस गड़रिये को बुला भेजा और उसका अच्छा सत्कार किया।

# विवेक-व्यापारी

एक शहर में एक पंडित था। वह एक दूकान खोलकर विवेक बेचा करता था। एक अमीर के पुत्र ने देखा कि दूकान पर एक सूचना पट लगा है जिस पर लिखा है–'यहाँ पर विवेक बेचा जायगा।' उसने उस पंडित से विवेक की बिक्री के संबंध में पूछ-ताछ की।

"एक रुपये से लेकर कई हजारों तक क़ीमतीवाले विवेक यहाँ पर बेचे जाते हैं।" पंडित ने जवाब दिया।

"एक रुपये का विवेक खरीद ले तो क्या होगा?" अमीर के बेटे ने पूछा।

"कौन कह सकता है? एक लाख रुपये का नफ़ा भी हो सकता है।" पंडित ने जवाब दिया।

अमीर के बेटे ने एक रुपया देकर एक विवेक खरीदा। उसने कागज़ का जो परचा खरीदा था, उस पर लिखा था– "दो बलवान व्यक्तियों के झगड़े में दखल नहीं देना चाहिये।"

अमीर के बेटे ने घर जाकर अपने पिता से कहा। अमीर अपने लड़के पर बहुत ही नाराज़ हुआ और बोला–"उस धूर्त ने तुमको दगा देकर एक रुपया हड़प लिया और कागज़ का यह टुकड़ा हाथ थमा दिया है। इसे उस दूकानदार के मुँह पर फेंककर रुपया वापस लेते आओ।"

अमीर का बेटा पंडित के पास गया। कागज़ का टुकड़ा उसे लौटा कर अपना रुपया मांगा। लड़के ने यह शपथ खायी कि उस कागज़ पर जो उपदेश लिखा है, उसे वह किसी भी हालत में अमल न करेगा। तब पंडित ने कागज़ के उस टुकड़े को लेकर रुपया लौटा दिया।

उस शहर का राजा एक दिन अपनी दो पत्नियों के साथ नगर का संचार करने

अरविंद कुमार

निकला । उसने एक जौहरी की दूकान में एक लाख रुपये का क़ीमती हार देखा । एक साथ दोनों रानियों के मन में उस हार को खरीदने की इच्छा पैदा हुई । अंत:पुर को लौटते ही दोनों रानियों ने अपनी अपनी दासियों के साथ रुपये देकर उस हार को खरीद लाने भेजा ।

दोनों दासियाँ एक ही समय दुकान में पहुँचीं और दूकानदार से हार मांगा ।

"मेरे पास एक ही हार है । किसी एक को ही मैं उसे दे सकता हूँ ।" व्यापारी ने कहा ।

दोनों दासियाँ यह कहकर झगड़ा करने लगीं कि मैंने पहले मांगा है । उस समय अमीर का बेटा वहीं खड़ा था ।

"तुम दोनों पहले समझौता कर लो, तब यह हार खरीद लो ।" दूकानदार ने समझाया ।

दोनों दासियों ने अपनी रानियों के पास लौट कर वहाँ का हाल सुनाया । दोनों ने राजा से शिकायत की । राजा ने पूछा कि इस बात के गवाह कौन है जिस दासी के पहले मांगते समय देखा हो? दोनों दासियों ने अमीर के बेटे को अपने गवाह बताया । राजा ने अमीर के बेटे को बुला भेजा ।

अमीर का बेटा डर गया । क्यों कि यह बड़ों के बीच का झगड़ा था । जिस किसी के पक्ष में भी गवाह दे तो उसे ही खतरे का सामना करना होगा । उसने अपने पिता से सलाह मांगी । वह उलझन में पड़ गया । क्यों कि उसने क़सम खायी थी कि पंडित के यहाँ से एक रुपया देकर जो विवेक खरीद कर लौटाया था, उसे वह अमल न करेगा ।

"बेटा, उस विवेक-व्यापारी के पास जाकर इस उलझन से बचने के काम में आनेवाला विवेक खरीद लाओ ।" अमीर ने अपने बेटे को समझाया ।

अमीर के बेटे ने पंडित के पास जाकर सारा वृत्तांत सुनाया और उस उलझन से बचने के लिए उचित विवेक की मांग की ।

"फिलहाल इस उलझन से बचने के लिए पाँच सौ रुपये का विवेक देता हूँ। मगर हमेशा के लिए इस उलझन से बचना चाहो, तो विवेक का दाम दो हज़ार रुपये और उसे अमल करने का खर्च एक लाख होगा, समझें?" पंडित ने बताया।

अमीर का बेटा अपने पिता की सलाह लेकर लौटा और पूछा–"पंडित जी, पाँच सौ रुपये का विवेक दीजिये।"

पंडित ने पाँच सौ रुपये लेकर कागज़ का एक पुर्जा लड़के के हाथ दिया। उस पर लिखा था–"पागल की गवाही की कोई क़ीमत नहीं होती।"

राजा ने जब दासियों की क़ैफियत तलब की तब अमीर के बेटे ने पागल जैसा अभिनय किया। राजा ने उसकी बातों की कोई क़ीमत न समझ कर दासियों की शिकायत खारिज़ कर दी।

इससे 'हार' दूकान में ही रह गया। उसे खरीदने का मौक़ा किसी भी रानी को न मिला। मगर रानियों की दासियों ने अमीर के बेटे से बदला लेना चाहा। उन दोनों ने अमीर के बेटे को डराया–"तुमने पागल जैसा नाटक रचकर वह हार किसी को खरीदने न दिया। हम तुमको नहीं छोड़ेंगी। ज़रूर बदला लेंगी।"

दोनों रानियों से अब खतरा पैदा हो गया था। इसलिए अमीर और उसका बेटा दोनों पंडित की दूकान पर पहुँचे और इस खतरे से बचने के लिए विवेक मांगा।

"मैंने पहले ही बता दिया था। तुम दो हज़ार रुपये तभी खर्च करते तो इस खतरे से बच जाते।" ये शब्द कहकर पंडित ने अमीर से दो हज़ार रुपये लिये और कागज़ के एक टुकड़े पर कुछ लिखकर दिया। उसमें यह लिखा था–"इस हार को तुम्हीं खरीद कर राजा को भेंट दो।"

अमीर ने एक लाख रुपये में वह हार खरीदा और अपने बेटे के हाथों से राजा को वह हार भेंट दिलाया। राजा ने अपनी दोनों रानियों की अनुमति से बहू को वह हार उपहार में दिया।

एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थान परित्यज्य ये
सामान्यास्तु परार्थ मुद्यमभ्रुतः स्वार्थाविरोधेन ये
तेमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नंति ये
येतु घ्नंति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे ॥ १ ॥

[ अपने स्वार्थ को त्याग जो परोपकार करते हैं, वे सत्पुरुष हैं; अपने कार्यों के भंग न होने देकर दूसरों का उपकार जो करते हैं, वे सामान्य व्यक्ति हैं; अपने स्वार्थ के वास्ते दूसरों की हानि करनेवाले लोग मानव रूपी राक्षस हैं। अपना लाभ न होते हुए भी जो दूसरों की हानि करते हैं, उन्हें न मालूम क्या कहना होगा। ]

पापा न्निवारयति, योजयते हिताय, गुह्यं निगूहति, गुणान् प्रकटीकरोति;
अपद्गतं च न जहाति, ददाति काले; सन्मित्रलक्षण मिदं प्रवदंति सन्तः ॥ २ ॥

[ बुजुर्गों का कहना है कि अनुचित कार्यों को रोकना, अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित करना, रहस्यों को गुप्त रखना, अच्छे गुणों को फैलाना, ख़तरे के समय साथ देना, समय पर सहायता करना— ये सब अच्छे मित्र के लक्षण हैं। ]

मनसि बचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः त्रिभुवन मुपकारश्रेणिभिः प्रीणयंतः,
परगुणपरमाणून पर्वतीकृत्य नित्यं निजहृदि विकसंतः संति सन्तः कियंतः ॥ ३ ॥

[ मन और वाणी के द्वारा पुण्य कार्य करते, तीनों लोकों का उपकार करते, अल्प उत्तम कार्य को भी विशाल रूप में देख आनंद पानेवाले सज्जन व्यक्ति बहुत ही कम होते हैं। ]

सज्जन

[ ५ ]

[ खड्गवर्मा तथा जीवदत्त वृद्ध मवेशी से मिले। उसी समय बाघ को देखकर बैल भड़क उठे, और अंधाधुंध जंगल की ओर भाग खड़े हुए। खड्गवर्मा तथा जीवदत्त पैदल चलकर सूर्योदय के पहले एक छोटे से गाँव में पहुँचे। उस गाँव के मुखिये ने अपने नौकर भेजकर उन्हें बुला भेजा। वे दोनों गाँव की कचहरी की ओर रवाना हुए। बाद— ]

खड्गवर्मा तथा जीवदत्त जब कचहरी में पहुँचे, तब उन्हें देखते ही भीड़ में कानापूसी शुरू हुई। नौकरों ने उन दोनों को गाँव के मुखिये के सामने हाजिर किया। मुखिये ने उनकी ओर घूर घूरकर देखा और गरज कर पूछा—"तुम दोनों में से कौन वीरभद्र है और कौन रामभद्र है?"

"इन नामों के लोग हम में से कोई नहीं है।" जीवदत्त ने जवाब दिया।

"ऐसी बात है? तब तो तुम्हारे क्या नाम हैं?" गाँव के मुखिये ने पूछा।

जीवदत्त इस सवाल का जवाब देना ही चाहता था कि खड्गवर्मा बीच में बोल उठा—"मेरा नाम खड्गवर्मा है और मेरे इस मित्र का नाम जीवदत्त।"

"अरे नाम बदलने में कौन-सी कठिनाई है? अपने बायें हाथ तो फैलाओ।" मुखिये ने क्रोध से पूछा।
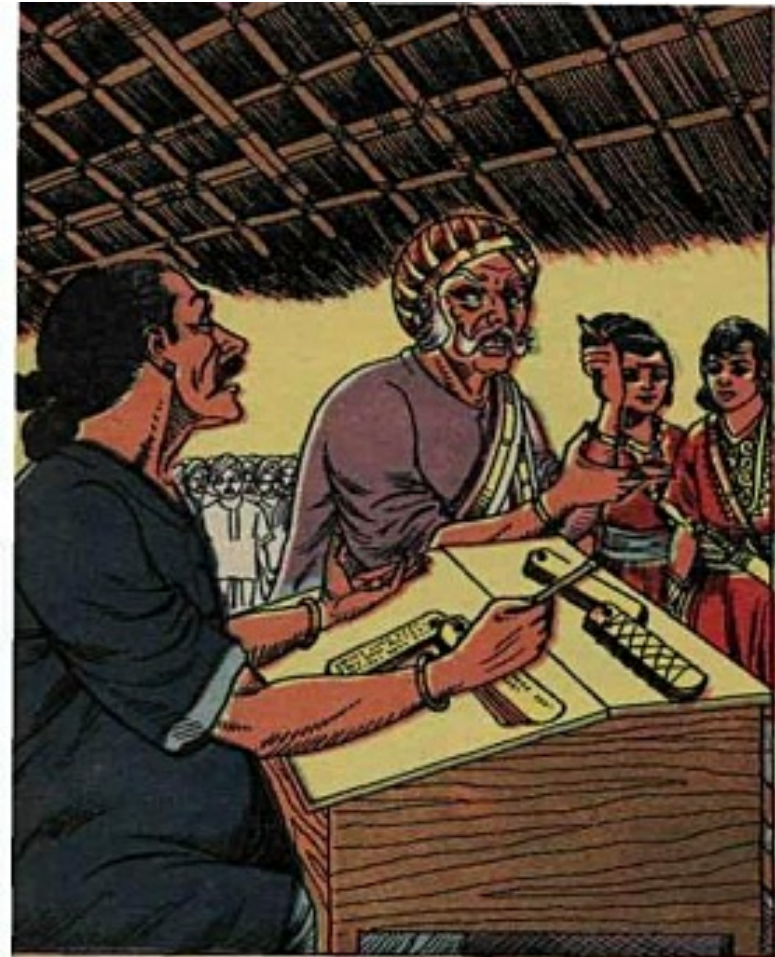
खडगवर्मा और जीवदत्त ने अपने हाथ फैलाये। मुखिये ने उनके हाथों की जाँच करके कहा–"अरे, तुम्हारे तो पाँच ही उँगलियाँ हैं! देखें, दायें हाथ फैलाओ।"

खड्गवर्मा और जीवदत्त ने अपने दायें हाथ फैलाये। मुखिये ने उनकी उँगलियों की गिनती करके निराशा भरे स्वर में कहा–"तुम मेरी आँखों में देखो।"

"खड्गवर्मा और जीवदत्त भीतर ही भीतर नाराज़ थे। लेकिन अपने क्रोध पर क़ाबू रखते हुए मुखिये की ओर देखा–"तुम दोनों काने तो मालूम नहीं होते।" इन शब्दों के साथ मुखिये ने मुन्शी की ओर देखा। मुन्शी ने खड्गवर्मा और जीवदत्त की ओर ध्यान से देखते हुए कहा–"राजा का ढिंढोरा पिट्वाना, इन दोनों में से एक का काना होना और एक के हाथ में छः उँगलियों के होने की बात रहने दीजिए। लेकिन आपकी बेटी कैसे गायब हो गयी? क्या, आप यह सोचते हैं कि उसे तालाब में नहाते देख कोई यक्ष या गंधर्व उठा ले गये?"

मुन्शी की यह बात सुनते ही मुखिये को अपनी बेटी की याद आ गयी। उसका दिल कसक उठा। उसकी इकलौती बेटी को एक सप्ताह पहले तालाब में नहाते कोई उठा ले गया था। मुखिये ने बड़ी खोज-खबर की, पर उसका पता न चला।

मुन्शी की बातों में जो संकेत था उसे मुखिये ने भाँप लिया और खड्गवर्मा और जीवदत्त की ओर क्रोध भरी निगाह डालते हुए पूछा–"तुम लोग इस गाँव में किस काम से आये हो?"

"हम देशाटन पर निकले। रास्ते में यह गाँव पड़ा। सोचा कि आज का दिन यहाँ बिताया जाय। यहाँ पर हमारा कोई काम भी तो नहीं है।" जीवदत्त ने कहा।

मुखिये की बातें सुनकर मुन्शी बोला–"इस गाँव के चारों तरफ़ के जंगल में

चोर और लुटेरे स्वेच्छा से घूम रहे हैं। पूछने पर बहाना करते हैं कि देशाटन कर रहे हैं। यह अच्छा होगा कि दोनों को दो दिनों तक इसी गाँव में रखा जाय। इस बीच हमें उन दोनों का पता चलेगा जिनको पकड़ने के लिए हमारे राजा ने ढिंढोरा पिटवाया है। हो सकता है कि आप की पुत्री को हड़पकर ले जानेवाले दुष्टों का भी पता लग जाय।"

मुन्शी की बातें खड्गवर्मा और जीवदत्त को बकवास-सी मालूम हुईं। उनकी समझ में यह नहीं आया कि मुखिये की बेटी का अपहरण क्यों हुआ। खड्गवर्मा का चेहरा तमतमा उठा। उसने मुखिये तथा मुन्शी की ओर क्रोधभरी दृष्टि से देखा। अपनी तलवार की मूठ पर हाथ रखकर जीवदत्त की ओर इशारा किया। उसका अर्थ था कि इन बदमाशों को तलवार के घाट उतारकर इस गाँव से भाग जायें। मगर जीवदत्त ने हाथ उठाकर शान्त हो जाने का संकेत किया।

मुखिये ने नौकरों को बुलाकर आदेश दिया—"इन दोनों को पीपल के पेड़ के पास की झोंपड़ी में बन्दी बनाकर इन पर कड़ी निगरानी रखो। कल सुबह इन्हें फिर कचहरी में ले आओ।"

नौकर उन दोनों यात्रियों को एक झोंपड़ी के पास ले गये। उन्हें भीतर जाने का संकेत किया। वह झोंपड़ी अपराधियों को बन्दी बनाने के काम में लायी जाती थी। गाँव के चारों तरफ़ जो बाड़ी बनी थी, उसमें गाँव के बाहर जाने के लिए बाँस का बना एक मजबूत दरवाज़ा भी था।

जीवदत्त के मन में यह संदेह हुआ कि गाँव के मुखिये तथा मुंशी अपने भोलेपन और मूर्खता के कारण उन्हें नाहक़ तक़लीफ़ों में फँसा देंगे और उनसे निकलना कठिन होगा। यदि यह अफ़वाह दूर तक फैल जाय कि दो युवक एक गाँव में बन्दी हैं

और यह समाचार धीरे धीरे राजधानी तक पहुँच जाय तो असली रहस्य खुल जाने की संभावना है...

"खड्गवर्मा, तुम जल्दबाजी में आकर कुछ कर न बैठो। आज रात को हम लोग यहाँ से भाग जायेंगे। पहरेदार की आँखों में धूल झोंककर जंगल में भाग जाना कोई मुश्किल की बात नहीं है।" जीवदत्त ने कहा।

"यह तो बताता है कि लड़की को कोई भगा ले गया, आखिर बात क्या है?" खड्गवर्मा ने पूछा।

"यह बात तो मेरी भी समझ में नहीं आ रही है।" जीवदत्त नें कहा।

उस दिन दोपहर को भठियारिन के यहाँ से एक युवक उन्हें खाना ले आया। उससे पूछने पर बताया कि गाँव के मुखिये की जवान लड़की को तालाब के पास खड़े देख कोई दुष्ट भगा ले गया है।

"असली बात यह है, इस घटना की वजह से ही इन दोनों बूढ़ों के दिमाग खराब हो गये हैं।" जीवदत्त ने कहा।

खड्गवर्मा सर हिलाकर मौन रह गया। उसे उस झोंपड़ी में बैठे रहना ऐसा मालूम होता था, मानों वह कांटों पर बैठा हो। पद्मपुर में एक भारी खतरे से बचकर आये और यहाँ एक क़मबख़्त गाँव के मुखिये के हाथों में फँस जाना उसे अपमान-सा लगा।

जैसे-तैसे दिन का वक़्त गुजर गया। पहरेदारों में से एक झोंपड़ी के सामने पीपल के पेड़ से सटे बैठा रहा और दिन भर ऊँघता रहा। उसकी बगल में एक भाला चमक रहा था।

"यह गाँव तो मूर्खों का मालूम होता है। वरना यह क्या, यह ऊँघनेवाला व्यक्ति हमारा पहरा देगा? छीः छीः चले चलो, भाग जायें।" खड्गवर्मा ने खीझ भरे स्वर में कहा।

"खड्गवर्मा! जल्दी न मचाओ। हमारा भाग जाना सबको मालूम हो जायें तो खतरा पैदा होगा। ये लोग हमको

सचमुच अपराधी मान बैठेंगे। रात में भाग जायेंगे, तो सुबह जब उन्हें पता चलेगा, तब तक हम कई कोस दूर भाग सकते हैं!" जीवदत्त ने कहा।

शाम को जब सूर्यास्त हो गया तब धीरे-धीरे जंगल को अंधेरा घेरने लगा। दिन भर जंगल के प्रदेश में स्थित खेतों में काम करनेवाले किसान अपने पशुओं तथा खेती के औजारों के साथ गाँव लौट रहे थे। उनके वास्ते पहरेदार ने गाँव के बाड़ीवाला दर्वाजा खोल दिया।

थोड़ी देर बाद भटियारिन के यहाँ से खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को खाना लाया गया। बातचीत के सिलसिले में उसने गाँव की अफ़वाहों का परिचय खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को दिया। ये अफ़वाहें थीं कि इधर गाँव के दो-तीन व्यक्तियों ने जंगल में भैरव के कुछ भक्तों को देखा। उनमें से दो आदमी अपने वेश बदल कर भैरव की बलि देने योग्य कन्याओं का पता लगाने गाँव के भीतर आ गये हैं।

इन अफ़वाहों को सुनकर खड्गवर्मा नाराज हो बोला—"क्या हमें भैरव के भक्त मानते हैं? तब तो मैं उस अफ़वाह को सत्य साबित कर दिखा दूंगा। यहाँ से जाने के पहले हम गाँव के मुखिये और मुंशी को भी जरूर भैरव की बलि दे देंगे।"
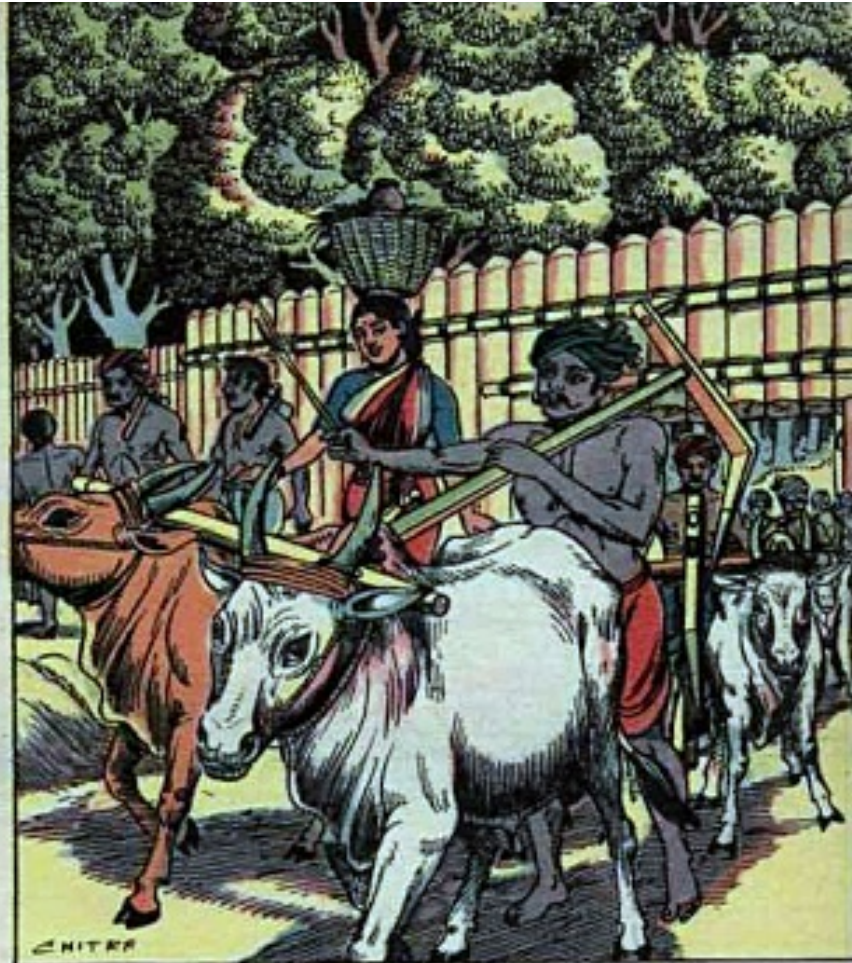
"साहब, आप दोनों बेचारे इन बूढ़ों को क्यों मारना चाहते हैं? अगर हो सका तो यहाँ से भाग जाइये। मुंशी जो है, बड़ा ही दुष्ट है। वह राजा की प्रशंसा पाने के लिए सब तरह के नीच कार्य करने को तैयार हो जायगा।" भटियारिन के नौकर ने बताया।

उसकी इस सहानुभूति को देख जीवदत्त खुश हुआ और उसके हाथ चाँदी का एक सिक्का धरते हुए बोला—"तुम इन अफ़वाहों पर बिलकुल विश्वास न करो। अब जा सकते हो।"

भटियारिन का नौकर चला गया। पहरेदारों में से दूसरा व्यक्ति रात को

पहरा देने आया। एक बार उसने झोंपड़ी में झांककर देखा, पीपल के पास जाकर उसके तने के पास चटाई बिछाई और उस पर बैठ गया। उसने पहले ही झोंपड़ी का दर्वाजा रस्सी से कसकर बांध दिया था।

आधी रात होने को थी। गाँव के चारों तरफ़ रक्षा के लिए जो बड़ी बाड़ी बनायी गयी थी, उसके पार जंगल में जंगली जानवर स्वेच्छा से घूमते गरज रहे थे। खास कर एक हाथी बाड़ी के समीप घूमते घींकार कर रहा था। जब भी हाथी घींकार करता तब पहरेदार चौंक पड़ता। उठकर बंदियों की झोंपड़ी की जाँच करता कि रस्से तो टूट न गये।

खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को मुखिये के जाल से बचने के लिए यह अच्छा मौक़ा था। वे दोनों झोंपड़ी से बाहर आये और सीधे पेड़ के पास बैठे पहरेदार के पास पहुँचे। पहरेदार उनकी ओर देख मुस्कुरा पड़ा। उसमें इस बात का ज़रा भी डर दिखाई न देता था कि उन दोनों के द्वारा उसे किसी प्रकार का खतरा पैदा होगा।

खड्गवर्मा ने म्यान से तलवार निकाली। इसे देख पहरेदार कुछ बोलने को हुआ, तभी जीवदत्त धीमे स्वर में बोल उठा– "मेरे सवालों का जवाब शांति के साथ दो। तुम्हारी जान का खतरा न होगा। चिल्लाकर हो हल्ला मचाओगे तो तुम्हारी जान की खैर न होगी।"

इन बातों को सुनने पर पहरेदार कांप उठा। वह प्राणों के डर से तुतलाते बोला–"आप लोग मुझे मार न डालियेगा। आपको गाँव के मुखिये ने तक़लीफ़ों में फंसा दिया है। मैं उनका नौकर हूँ। वे जो भी काम सौंपेंगे, मुझे करना होगा।"

"यह बात हम भी जानते हैं। हमें तो इस बात का आश्चर्य होता है कि हमको भागने से रोकने के लिए तुम अकेले को पहरे पर क्यों बिठाया?" जीवदत्त ने कहा।

"ओह, आप लोगों की शंका यह है! जान को जो लोग प्यारे मानते हैं, वे

रात के समय बाड़ी को पार कर नहीं जाते। गाँव के चारों तरफ़ जो जंगल फैला है, उसमें खूँख्वार जानवर सवेरे तक घूमा करते हैं।" पहरेदार ने कहा।

"ऐसी बात है! हमारे प्राणों के प्रति आशा ही नहीं बल्कि हो सके तो सौ वर्ष जीने की हमारी इच्छा भी है। हम इस क़ैद से भाग जाना चाहते हैं। तुम बाड़ी का दर्वाज़ा खोल दो। वैसे बाड़ी को लांघ कर हम लोग जा सकते हैं, मगर कोई देख ले तो खतरा पैदा होगा।" जीवदत्त ने कहा।

"साहब, बाड़ी के उस पार शेर, बाघ, भालू आदि घूमा करते हैं। एक हाथी भी घींकार करते कैसे घूम रहा है? देखते हैं न?" पहरेदार ने समझाया।

"अरे, हम उनकी बावत देख लेंगे। तुम अपना बकवास बंद कर पहले दर्वाज़ा तो खोल दो।" खड्गवर्मा ने क्रोध में आकर कहा।

"अच्छा साहब, खोल देता हूँ। मैंने बताया कि रात के समय जंगल में जाना कैसे खतरे से खाली नहीं है, आप लोग मेरी बात मानते ही नहीं, क्या किया जाय?" ये शब्द कहते पहरेदार बाड़ी की ओर आगे बढ़ा। उसके पीछे खड्गवर्मा तथा जीवदत्त चले।

पहरेदार दर्वाज़े तक गया। उसके रस्सों को खोलते रुक गया और बोला— "साहब, मैं रस्से खोल दूं तो मेरी जान खतरे में पड़ जायगी। मुखिये सोचेंगे कि मैंने आप लोगों को भाग जाने में मदद दी है। हो सकता है कि इस अपराध के लिए मुझे फांसी के तख्ते पर चढ़ा दे। आप लोग एक काम कीजियेगा। इस पगड़ी को लेकर इससे मेरे हाथ-पैर बांध दीजिये। मेरे मुंह पर एक पट्टी बांध दीजिये। अपनी तलवार से इन रस्सों को काट कर भाग जाइये। ऐसी हालत में कोई भी मुझ पर शंका न करेगा।" बिनती के स्वर में पहरेदार ने कहा।

पहरेदार की बातें जीवदत्त को पसंद आयीं। वह सच ही तो कह रहा था। बेचारे इस निरपराधी को क्यों कठिनाइयों में फँसा दे? खड्गवर्मा ने भी मान लिया। तुरंत वे दोनों पहरेदार को पेड़ के पास ले गये। उसकी पगड़ी फाड़ कर उसके हाथ-पैर बांध दिये। तब सर के पीछे कपड़े की गांठ बांधने लगे।

तब तक पहरेदार मौन बैठा रहा। हठात् उसके मन में कोई विचार आया। वह बोल पड़ा—"साहब, मेरे हाथ-पैर बांध कर आप मुझे इस पेड़ के नीचे छोड़ जायेंगे तो बाड़ी के दर्वाज़े से कोई खूंख्वार जानकर आकर मुझे खा डालेगा। इसलिए आप लोग मेहरबानी करके मुझे इस पेड़ की डालों में बिठाकर चले जाइये।" रोते स्वर में पहरेदार ने समझाया।

"अरे हमारे मन में यह संदेह पैदा ही नहीं हुआ। वरना तुम नाहक़ किसी जंगली जानवर का आहार बन जाते!" जीवदत्त ने कहा।

इसके बाद जल्दी-जल्दी खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने पहरेदार के हाथ-पैर बांध दिये। उसे एक चटाई में लपेट कर पेड़ की डालों में बिठा दिया। जब उसके मुंह पर पट्टी बांधने लगे, तब पहरेदार बोल उठा—"साहब, खबरदार! एक हाथी बाड़ी के पास ही मंडरा रहा है!"

खड्गवर्मा ने हँसते हुए उत्तर दिया—"वह हाथी बाड़ी के साथ दर्वाज़े का भी ख्याल करते घूम रहा है तो वह मामूली हाथी न होगा। हाथी के रूप में कोई मांत्रिक होगा। हम उसकी खबर लेंगे।"

इसके बाद खड्गवर्मा तथा जीवदत्त बाड़ी की ओर चुपचाप चले। दोनों वीरों की समझ में आया कि पहरेदार की बातों में ज़रा भी अतिशयोक्ति नहीं है। एक हाथी बाड़ी के उस पार पेड़ों के नीचे खड़े हो घींकार कर रहा था। खड्गवर्मा और जीवदत्त ने सोचा कि शायद गाँववाले उस हाथी के बच्चे को जंगल से फँसाकर गाँव में लाये होंगे। (और है)

# गुप्त व्यक्तित्व

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने यों कहा—"राजन, तुमको देखने पर कोई भी तुम्हारे बड़प्पन को समझ नहीं पायगा। कुछ लोग हयग्रीव की भांति अपने बड़प्पन को गुप्त रखते हैं। श्रम को भुलाने के लिए मैं तुमको हयग्रीव की विचित्र कहानी सुनाता हूँ। सुनो।"

बेताल यों कहने लगा—"एक देश में एक किसान के तीन बेटे थे। बड़े दोनों लड़के होशियार थे, मेहनत करके कमानेवाले थे। तीसरा बेटा हयग्रीव स्वभाव का कोमल और भला व्यक्ति था। इसलिए हयग्रीव के माता-पिता तथा भाई उससे कोई काम नहीं लेते थे। उनका विचार था कि हयग्रीव मंद बुद्धिवाला है।

## वेताल कथाएँ

घोषणा की कि राजकुमारी अपने महल की दूसरी मंजिल पर खड़ी रहेगी। जो युवक उतनी ऊँचाई तक उछल कर उसके पास पहुँचेगा, उसके साथ राजकुमारी का विवाह किया जायगा।

यह घोषणा सुनकर देश भर के ब्रह्मचारी युवक उस प्रतियोगिता में भाग लेने आये। मगर एक भी व्यक्ति दूसरी मंजिल तक उछल न पाया। एक दिन हयग्रीव के भाई उस प्रतियोगिता में भाग लेने गये। हयग्रीव उनके साथ जाना नहीं चाहता था, इसलिए हाथ में एक लाठी ले जंगल की ओर चल पड़ा।

यही कारण है कि हर साल राजा के जन्मदिन के उत्सव को जब वह भी अपने भाइयों के साथ देखने जाने की इच्छा प्रकट करता तब उसकी माँ कहती—"बेटा, लोगों के बीच कैसे व्यवहार करना है, तुम नहीं जानते, तुम्हारे व्यवहार को देख सब लोग हँस पड़ेंगे, इसलिए तुम घर पर ही रह जाओ।" हयग्रीव जवाब में कहता—"अगर मैं कभी जाऊँगा तो सब की आँख बचाकर ही जाऊँगा।"

उन्हीं दिनों में राजा ने अपनी पुत्री का विवाह करने का निश्चय किया और उसके योग्य वर के निर्णय के लिए एक प्रतियोगिता का प्रबंध किया। राजा ने

जंगल के एक तरफ़ फूलों के पौधों की एक बहुत बड़ी झाड़ी थी। हयग्रीव ने तीन बार अपनी लाठी से झाड़ी पर प्रहार किया। तुरंत एक देवी प्रत्यक्ष हुई। उस देवी को हयग्रीव बहुत दिनों से जानता था। मगर यह बात किसी को मालूम न थी।

"तुमको क्या चाहिये?" देवी ने हयग्रीव से पूछा।

"तेज दौड़नेवाला घोड़ा, चाँदी की पोशाकें और चाँदी के सिक्के चाहिये।" हयग्रीव ने जवाब दिया।

दूसरे ही क्षण उसकी सभी इच्छाओं की पूर्ति हुई। वह घोड़े पर राजमहल की ओर चल पड़ा। रास्ते में अपने भाइयों से

मुलाक़ात हुई। उसने अपने भाइयों से पूछा–"तुम दोनों कहाँ जा रहे हो?"

दोनों भाई हयग्रीव को पहचान नहीं पाये। बोले–"हम राजमहल में जा रहे हैं।"

"तुम लोगों का शुभ हो।" ये शब्द कहकर हयग्रीव अपने भाइयों को तीन-तीन चाँदी के सिक्के दे आगे बढ़ा।

हयग्रीव जब राजमहल के पास पहुँचा, तब लोग उसकी ओर आश्चर्य के साथ देखने लगे। ऐसी क़ीमती और सुंदर पोशाक पहननेवाले व्यक्ति को लोगों ने इसके पहले कभी न देखा था। महल पर खड़ी राजकुमारी ने भी उसकी ओर आचरज के साथ देखा।

हयग्रीव घोड़े से उतर कर दूसरी मंजिल की ओर उछल पड़ा, मगर वह दूसरी मंजिल पर पहुँच नहीं पाया। इसके बाद वह चुपचाप अपने घोड़े के पास गया। घोड़े पर चढ़कर वहाँ से चला गया। वह सीधे फूलों की झाड़ी के पास पहुँचा। सारी पोशाकें देवी को सौंप कर घर लौट आया। बहुत देर बाद उसके भाई घर लौटे। वे यह सोचने लगे कि वह क़ीमती पोशाक पहन कर आया हुआ व्यक्ति कौन होगा? ये बातें सुनते हयग्रीव घर के एक कोने में लेटा पड़ा था।

दूसरे दिन जब हयग्रीव के भाई राजमहल की ओर चल दिये, तब वह जंगल में चला गया। देवी से मांग कर एक बढ़िया घोड़ा, सोने की पोशाकें और सिक्के लेकर चल दिया। रास्ते में अपने भाइयों से मिलकर हर एक को दस-दस सोने के सिक्के दे आगे बढ़ गया।

इस बार वह दूसरी मंजिल तक उछल सका, लेकिन वहाँ ठहर न पाया। तुरंत नीचे कूद कर अपने घोड़े पर सवार हो वहाँ से चल दिया। जंगल में जाकर देवी को सारी चीजें सौंप दी और घर पहुँच कर एक कोने में पड़ा रहा। हयग्रीव के भाई घर लौट कर राजमहल की बातें बड़े उत्साह के साथ अपनी माँ को सुनाने लगे। इस बीच राजा को इस बात का बड़ा

क्रोध आया कि जो युवक प्रतियोगिता में जीत गया है, वह भाग गया है। इसलिए उसने यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो व्यक्ति उसे पकड़ लायगा, उसे भारी इनाम दिया जायगा।

"उस आदमी ने हमारा बड़ा उपकार किया है, फिर भी कल वह जब हम से मिलेगा तब उसे पकड़ कर हम राजा को सौंप देंगे और बढ़िया इनाम पायेंगे।" हयग्रीव के भाइयों ने अपनी माता से कहा।

"वह आसानी से शायद तुम्हारे हाथ न आयेगा?" हयग्रीव ने कहा।

"अरे, तुम क्या जानते हो? निरे बुद्धू हो।" भाइयों ने उसे डांट बतायी।

दूसरे दिन बड़े सवेरे ही हयग्रीव के भाई राजमहल की ओर चल पड़े। उस दिन हयग्रीव को भी तड़के उठते देख उसकी माँ को आश्चर्य हुआ।

"माँ, वैसे कोई खास बात नहीं, मैं जंगल में जाकर लकड़ी काट लाना चाहता हूँ।" हयग्रीव ने अपनी माता से कहा। हयग्रीव जंगल में तो चला गया, पर लकड़ी काटने के लिए नहीं। इस बार उसने देवी से मांग कर रत्नों से सजे घोड़े, पोशाकें तथा रत्नों से भरी थैली ले ली।

हयग्रीव जब रास्ते में अपने भाइयों से मिला तब वे चिल्ला पड़े—"अरे चोर, तुम हमारे हाथों में आ गये। चलो, राजा के पास।" ये शब्द कहते वे उसे घोड़े पर से नीचे खींचने लगे। हयग्रीव ने दोनों को जोर से लात मारी और कहा—"तुम दोनों मूर्ख मालूम होते हो। मगर मैं तुम्हारे जैसे मूर्खों पर नाराज़ नहीं होता, तुम पर मुझे दया आती है।" इसके बाद दो मुट्ठी भर रत्न उन पर फेंक कर बोला—"लो, यह तुम्हारा इनाम है।" तब वह तेजी से आगे बढ़ा।

हयग्रीव के राजमहल के पास पहुँचते ही सिपाहियों ने उसे घेर लिया। मगर वह बड़ी होशियारी से राजमहल के पास गया। उछल कर एक ही छलांग में दूसरी मंजिल पर जा पहुँचा।

राजकुमारी ने हयग्रीव से कहा–"तुम नहीं चाहते हो तो मेरे साथ विवाह करने को मैं ज़बर्दस्ती नहीं करूँगी। मगर मेरी यादगारी के लिए यह अंगूठी तुम अपने हाथ में रखो।" इन शब्दों के साथ राजकुमारी ने अपने हाथ की अंगूठी उतार कर हयग्रीव की उंगली में पहना दी।

हयग्रीव राजमहल से जब नीचे कूद पड़ा तब उसे पकड़ने के लिए राजभट झपट पड़े। पर हयग्रीव सीधे घोड़े पर कूद पड़ा और पल भर में वहाँ से भाग खड़ा हुआ। थोड़ी ही देर में वह देवी के पास पहुँचा। सारी चीज़ें देवी को सौंप दीं, घर लौट कर एक कोने में लेट गया। हयग्रीव के भाइयों ने घर लौट कर अपनी माता से कहा–"हमारे बुद्धू हयग्रीव के कहे अनुसार हम उस राजकुमार को पकड़ नहीं पाये। फिर भी देखो, माँ, उस राजकुमार ने हमें क्या-क्या दिया है।" उन दोनों ने अपनी माँ को वे सारे रत्न दिखाये। माँ यह सोचकर खुश हो गयी कि उन रत्नों की वजह से अपने बेटों के दिन आराम से बीत जायेंगे।

राजकुमारी को जीतनेवाले के भाग जाने पर राजा बहुत परेशान हो उठा। राजा ने अपने राज्य के सभी प्रमुख व्यक्तियों को दावत में बुलाया। पर उनमें वह व्यक्ति न था जिसे राजकुमारी ने वर लिया था। राजा ने सोचा कि वह व्यक्ति संपन्न परिवार का न हो, इसलिए साधारण

प्रजा तथा गरीबों को भी दावत का प्रबंध किया। पर कोई प्रयोजन न निकला।

इसके बाद राजा ने अपने भटों को यह आदेश दिया कि वे इस बात का पता लगावे कि राजकुमारी की अंगूठी किसकी उंगली में है। उनमें से दो-चार भट हयग्रीव के घर पहुँचे, उसकी उंगली में अंगूठी देख उसे राजा के पास ले गये।

चीथड़े पहने किसान के पुत्र हयग्रीव को देख राजा के मन में यह विश्वास नहीं जमा कि इसी ने ऐसी सामर्थ्य दिखायी है। मगर बात सच थी, इसलिए उसे अच्छे वस्त्र पहना कर राजा ने राजकुमारी के साथ हयग्रीव का विवाह किया।

इस विवाह के थोड़े ही दिन बाद राजा को एक युद्ध में जाना पड़ा। राजा ने अपने दो पुत्र तथा दामाद हयग्रीव को भी युद्ध में जाने का आदेश दिया। हयग्रीव सब से पहले राजमहल से निकला और रास्ते में एक तालाब के पास रुक कर मेंढकों से खेलने लगा।

थोड़ी देर बाद राजकुमार सेना लेकर उधर से निकले। अपने बहनोई को छोटे बच्चे की भांति खेलते देख खीझ उठे और युद्ध क्षेत्र की ओर आगे बढ़े। सेना के आगे बढ़ते ही हयग्रीव फूलों की झाड़ी के निकट पहुँचा। देवी से एक बढ़िया घोड़ा तथा भारी सेना को भी आसानी से जीत सकनेवाली सुंदर तलवार प्राप्त की, और अपने सालों से जा मिला। हयग्रीव को राजकुमारों ने नहीं पहचाना। उसने राजकुमारों से पूछा—"तुम लोग कहाँ जा रहे हो?"

"हम युद्ध करने जा रहे हैं।" राजकुमारों ने उत्तर दिया।

"मैं भी वहीं जा रहा हूँ। चलो," ये शब्द कहते हयग्रीव भी उनके साथ हो लिया। युद्ध के मैदान में पहुँचते ही वह दुश्मन की फौज में घुसकर अंधाधुंध सिपाहियों का वध करने लगा। शाम तक लड़ाई होती रही, मगर किसी की जीत न हुई।

शाम को राजकुमारों ने घर लौट कर अपने साथ आये वीर और मेंढ़कों के साथ खेलनेवाले बहनोई के बारे में चर्चा की।

इसी समय हयग्रीव भी वहाँ आ पहुँचा। राजा ने क्रोध में आकर कहा—"तुमने मेरा यश मिट्टी में मिला दिया। मेरी पुत्री ने कायर के साथ विवाह किया।"

दूसरे दिन राजा स्वयं सेना का संचालन करते युद्ध भूमि में पहुँचा। राजा ने हयग्रीव को अपने साथ चलने का आदेश दिया, पर वह मार्ग मध्य में घोड़े को घुमाकर तेजी से चला गया। राजा ने मन में सोचा—

"कायर, इसे मैं अपने महल के अंदर क़दम रखने न दूँगा।"

राजा जब तक युद्ध के मैदान में पहुँचा, तब तक युद्ध समाप्त हो चुका था। शत्रु की सेना तितर-बितर हो गयी थी। और शत्रु राजा बंदी बना हुआ था।

"यह सब कैसे हुआ?" राजा ने अपने शत्रु राजा से पूछा।

"आप के एक ही योद्धा ने मेरी सारी सेना का नाश किया। मैं नहीं जानता, वह कौन था, पर एक हज़ार राक्षसों की ताक़त रखता है।" शत्रु राजा ने कहा।

"वह कहाँ पर है?" राजा ने पूछा।

"घायल होकर उस पेड़ के नीचे पड़ा हुआ है।" शत्रु राजा ने जवाब दिया।

राजा ने उस योद्धा के पास जाकर देखा। वह शिरस्त्राण पहना हुआ था, इसलिए उसका चेहरा राजा को दिखाई नहीं दिया। मगर उसकी जांघ पर गहरा घाव हो गया था और उसमें से खून बह रहा था।

राजा ने अपना जरी वस्त्र फाड़कर उस योद्धा के घाव पर पट्टी बंधवायी और पूछा—"वीर, तुम कौन हो?"

"मैं मैं ही हूँ।" हयग्रीव ने उत्तर दिया। वह वीर उठ खड़ा हुआ, अपने घोड़े पर सवार हो चला गया। थोड़ी देर बाद अपनी साधारण पोशाकें पहन कर राजमहल में पहुँचा। घाव दर्द कर रहा था, इसलिए अपने कमरे में जाकर लेट गया।

राजा के राजमहल में प्रवेश करते ही राजकुमारों ने उससे पूछा–"क्या आपने अपने जरी वस्त्र से हयग्रीव के घाव पर पट्टी बंधवा दी ?"

राजा को अपने पुत्रों की बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह हयग्रीव के कमरे में पहुँचा। उसके घाव की पट्टी देख बोल उठा–"बेटा, वह योद्धा तुम हो ? यह बात तुमने उसी वक़्त क्यों नहीं बतायी ?"

"मैंने तो कहा था, मैं मैं ही हूँ।" हयग्रीव ने जवाब दिया।

राजा इस बात पर गर्व करने लगा कि उसे ऐसा वीर दामाद मिल गया है।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन, हयग्रीव ने अपने बड़प्पन को गुप्त रखने का प्रयत्न क्यों किया ? क्या विनय के कारण ? या राजा को अचानक विस्मय में डालने के ख्याल से ? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे, तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा–"हयग्रीव बड़ा ही विवेकशील है। पोशाक और बाहरी शक्तियों की वजह से मनुष्य का वास्तविक तत्व बदलता नहीं। मगर साधारण लोग यह बात नहीं जानते। जब उसने अच्छी पोशाकें पहन लीं तब सब ने उसे राजकुमार समझा। राजा ने उसे एक बार कायर समझा तो दूसरी बार महान योद्धा माना। यह केवल भ्रम है। हयग्रीव ने देवी की मदद से राजकुमारी को जीत लिया था। इसीलिए उसने उसके साथ विवाह करने का प्रयत्न नहीं किया। देवी की सहायता से ही उसने अकेले शत्रुओं को हराया। वह उसकी वीरता न थी। यश और प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाले कार्य करने के बाद भी उसने यही कहा– 'मैं मैं ही हूँ।' यह बात न भूलनेवाला हयग्रीव महान ज्ञानी माना जा सकता है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

# अक्ल की दवा

एक गाँव में एक बुद्धू था। उसके बुद्धूपन को देख सब हँस पड़ते थे। सब के मुँह से 'बुद्धू' शब्द सुनकर वह बड़ा दु:खी होता था।

"अरे बुद्धू, पहाड़ पर जाकर भीलनी से अक्ल की दवा क्यों नहीं लेते आओ?" कुछ लोग उसका मजाक़ उड़ाते।

गाँव के लोग जानते थे कि भीलनी तरह तरह की दवाएँ देती हैं और मंत्र-तंत्र जानती है। इसलिए बुद्धू ने भी इस बात पर यक़ीन किया और अपनी माँ के पास जाकर पूछा—"माँ, मैं पहाड़ पर रहनेवाली भीलनी के पास जाकर क्या अक्ल की दवा लेते आऊँ?"

"अच्छी बात है, बेटा, ले आओ। मगर सुनते हैं कि वह भीलनी बड़ी चतुर है। होशियारी से काम बना लेना, समझे!" माँ ने बुद्धू को समझाया।

बुद्धू पहाड़ पर चढ़कर भीलनी के पास पहुँचा। वह चूल्हे में आग जलाकर कलछी से बर्तन में हिला रही थी।

"ख़ैरियत हो न, भीलनी दीदी?" बुद्धू ने पूछा।

"ख़ैरियत से हूँ, बेटा।" भीलनी ने जवाब दिया। बुद्धू ने आसमान की ओर देख कहा—"पानी बरसेगा, शायद!"

"हाँ, शायद बरसेगा!" भीलनी ने कहा।

"शायद न भी बरसे!" बुद्धू ने कहा।

"यह भी सच हो सकता है।" भीलनी ने कहा। इसके बाद बातचीत कैसे आगे बढ़ानी है, बुद्धू की समझ में न आया। इसलिए उसने पूछा—"दीदी, अक़्ल की दवा हो तो दे सकती हो?"

"किस तरह की अक्ल की दवा चाहिये? राजाओं की अक्ल, सैनिक की अक्ल, या पंडितों की अक्ल? ऐसी अक्लों की दवा

निरंजन राय

तो मेरे पास नहीं है, बेटा!" भीलनी ने जवाब दिया।

"ऐसी अक्ल की दवा मुझे नहीं चाहिये। आम लोगों के काम में आनेवाली अक्ल की दवा मिले तो खुश हो जाऊँगा, दीदी!" बुद्धू ने अपना उद्देश्य बताया।

"ऐसी दवा हो तो शायद मैं मदद दे सकती हूँ, लेकिन पहले तुमको एक काम करना होगा!" भीलनी ने कहा।

"कौन-सा काम?" बुद्धू ने पूछा।

"इस दुनियाँ की चीजों में से सबसे ज़्यादा तुम जिसे पसंद करते हो, वह चीज ले आओ। तुमको मैं अक्ल की दवा पाने का उपाय बता दूँगी।" भीलनी ने समझाया।

"यह मैं कैसे जानूं?" बुद्धू ने पूछा।

"मुझे भी कैसे मालूम होगा? तुम अपनी पसंद की चीज़ लेते आओ, तब मैं तुम से एक सवाल करूँगी। उसका जवाब दोगे तो मैं समझ जाऊँगी कि तुम अपनी पसंद की चीज़ लाये हो कि नहीं।" भीलनी ने कहा। बुद्धू ने घर जाकर सारी बातें अपनी माँ को सुनायीं।

"भीलनी के कहे मुताबिक़ करो, बेटा? किसी भी तरह तुम अक्ल की दवा पाओगे तो तुम भी सब लोगों की भांति आराम से रह सकते हो!" माँ ने समझाया।

"मैं सबसे ज़्यादा मुर्गी का मांस पसंद करता हूँ। इसलिए भीलनी के पास मुर्गी ले जाऊँगा।" बुद्धू ने मन में सोचा।

दूसरे दिन बुद्धू एक मुर्गी लेकर भीलनी के पास पहुँचा और बोला—"दीदी, मैं सबसे ज़्यादा पसंद की चीज़ ले आया हूँ।"

"इससे ज़्यादा तुम्हारे पसंद की कोई चीज नहीं है? तब तो मेरे इस सवाल का जवाब दो—पैरों के बिना दौड़नेवाली चीज़ क्या है?" भीलनी ने पूछा। बुद्धू ने सर खुजलाया, मगर उसे कोई जवाब नहीं सूझा।

"तुम मेरे सवाल का जवाब नहीं दे सके। तुम जो चीज लाये हो, वह सही

नहीं है, आज मैं तुमको अक्ल की दवा नहीं दे सकती।" भीलनी ने कहा।

बुद्धू निराशा के साथ घर लौटा। माँ को देखते ही सर पीटते हुए बोला— "माँ, मैंने गलती की, इस दुनिया में तुम से बढ़कर पसंद की चीज़ कोई नहीं है। तुमको अपने साथ ले जाना चाहिये था, कल तुम मेरे साथ भीलनी के पास चलो।"

दूसरे दिन माँ-बेटे दोनों भीलनी के पास पहुँचे। "दीदी, मैं आज सचमुच अपनी सबसे ज्यादा पसंद की चीज़ लाया हूँ। वह मेरी यही माँ है।" बुद्धू ने कहा।

"मैं भी तो देखूंगी। मेरे इस सवाल का जवाब भी तो दो। जो सोना न होकर भी पीला रहता है और चमकता है, वह चीज़ क्या है?" भीलनी ने पूछा।

बुद्धू ने सर खुजलाते सोचा, मगर उस सवाल का जवाब उसे नहीं सूझा।

"देखा, इस बार भी तुम अपनी पसंद की चीज़ साथ नहीं लाये। देखने में तुम निरे बुद्धू मालूम होते हो। सचमुच तुम्हारे लिए अक्ल की दवा की ज़रूरत है।" भीलनी ने कहा।

"हाँ, यही तो मैं भी कहता हूँ।" ये शब्द कहकर बुद्धू अपनी माँ के साथ पहाड़ उतरने लगा। रास्ते में एक युवती से उनकी मुलाक़ात हो गयी।

"क्यों बुद्धू साहब, सर लटकाये हो? बात क्या है?" युवती ने पूछा। बुद्धू ने

सारा समाचार उसे सुनाया। युवती ने आश्चर्य में आकर पूछा।

"अरे, यह कैसा अन्याय है? तुम्हारी मदद करनेवाले कोई नहीं है?"

"कोई नहीं है।" बुद्धू गुनगुना उठा।

"तब तो मैं तुम्हारी मदद करूँगी। तुम्हारे साथ शादी करके तुम्हारी देखभाल किया करूँगी।" युवती ने कहा।

"तब तो आओ, हम दोनों शादी कर लें।" बुद्धू ने कहा। दोनों ने शादी की। बुद्धू की औरत ने गृहस्थी संभाल ली। आराम से उनके दिन कटने लगे।

बुद्धू बड़ा प्रसन्न था। उसने एक दिन अपनी औरत से कहा–"अरी पत्नी, इस दुनियाँ में मुझे तुम सबसे ज्यादा पसंद आती हो! चलो, पहाड़ पर रहनेवाली भीलनी के पास जायें, शायद वह मुझे अक्ल की दवा दे।" दोनों पहाड़ पर गये।

"दीदी, इस दुनियाँ में मुझे सबसे ज्यादा पसंद आनेवाली औरत को साथ लाया हूँ।" बुद्धू ने कहा।

"इस बात का फ़ैसला मैं करूँगी। बिना पैरों के चलनेवाली चीज़ क्या है?" भीलनी ने पूछा। बुद्धू की पत्नी ने उसके कान में कुछ कहा, तब बुद्धू ने भीलनी को जवाब दिया–"पानी।"

"सोना न होने पर भी पीला रहकर चमकनेवाली चीज़ क्या है?" भीलनी ने फिर पूछा। बुद्धू की पत्नी ने उसके कान में कुछ कहा। बुद्धू ने तब भीलनी को जवाब दिया–"सूरज!"

"अरे, और क्या? तुमने अक्ल की दवा प्राप्त की है।" भीलनी ने जवाब दिया।

"कहाँ पर है? मैं भी तो देखूँ?" अतुरता से बुद्धू ने पूछा।

"तुम्हारी पत्नी की खोपड़ी में! बुद्धू की दवा अक्लमंद पत्नी होती है, समझें! तुमको ऐसी ही पत्नी मिल गयी। अब चले चलो।" भीलनी ने समझाया।

बुद्धू और उसकी पत्नी पहाड़ से उतर कर खुशी-खुशी अपने घर चले गये।

# मर्कट पिशाच

जमाने की बात है। जापान देश में देशाटन करनेवाला एक धर्म गुरु था। एक दिन वह गुरु एक पहाड़ी गाँव में पहुँचा। उसने देखा कि हर एक घर में लड्डू जैसे मिष्टान्न बना रहे हैं। उसने सोचा कि इस गाँव में शायद जल्द ही कोई उत्सव होनेवाला है।

गुरु सारे गाँव में घूम रहा था। उसे एक अमीर के घर से रोने की आवाज़ सुनायी दी। उसे आश्चर्य हुआ, वह घर के अन्दर चला गया। बीच में एक लड़की को बिठाकर चारों तरफ़ कई लोग इकट्ठे हो रो रहे हैं। गुरु को आश्चर्य हुआ। बात उसकी समझ में न आयी। पर उस से रहा न गया।

"तुम सब किसलिए रोते हो?" गुरु ने पूछा।

घर के मालिक ने जवाब दिया—"एक हफ़्ते के भीतर हमें एक लड़की की बलि देनी है। सामनेवाले पहाड़ पर एक मंदिर है। उसमें कौन देवी है, हम नहीं जानते। मगर हर साल फ़सल की कटवाई के पहले मंदिर में एक लड़की की बलि देनी है। ऐसा न करे तो एक भयंकर तूफ़ान होगा और हमारी सारी फ़सलें नष्ट हो जायेंगी। इसलिए हम लोग लाचार होकर मनुष्यों की बलि देते आ रहे हैं। इस साल हमारी बारी आयी है। मुझे अपनी इस इकलौती बेटी को बलि देनी है। इसी वास्ते हम रो रहे हैं।" मालिक ने अपनी करूण कहानी सुनायी।

गुरु ने घर के मालिक की बातें सावधानी से सुनीं और कहा—"क्या दुनियाँ में ऐसी बातें भी होती हैं? तुम्हारी लड़की के बदले में बलि होने को तैयार हूँ।

शंकर नारायण

तुम अपनी लड़की को न भेजो। अगर मैं किसी की मदद कर सका तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।"

इसके बाद गुरु उस पहाड़ पर चला गया। वहाँ पर एक उजड़ा हुआ मंदिर था। मंदिर के पास एक बहुत बड़ा देवदार वृक्ष था। उसमें एक बड़ा खोखला था। उस रात को गुरु उस खोखले में छिप कर बैठ गया।

आधी रात के समय एक भीड़ मंदिर के सामने आ पहुँची। भीड़ के नेता ने आगे बढ़कर कहा–"अरे, 'षिप्पेय तरो' नहीं आया?"

"षिप्पेय तरो आज नहीं आयेगा।" दूसरे ने जवाब दिया।

इसके बाद मंदिर का दर्वाजा खोल सब लोग भीतर पहुँचे। थोड़ी देर बाद गुरु को मंदिर के भीतर से यह गीत सुनाई दिया–"नगहम निवासी षिप्पेय तरो,

षिप्पेय तरो से न कहो।"

इसी गीत को बार-बार दुहराते देख गुरु ने सोचा–चाहे ये किसी भी जाति के पिशाच क्यों न हो, ये षिप्पेय तरो के नाम से ही डरते हैं। इस नाम के व्यक्ति के हाथों में ये लोग बड़ी आसानी से हार सकते हैं।

गुरु उस रात को लड़की के घर लौट आया। षिप्पेय तरो नाम के व्यक्ति को ढूँढने के लिए नगहम नामक गाँव के लिए चल पड़ा। वह एक छोटा-सा बस्ती था। गुरु ने वहाँ जाकर सबसे यही पूछा–"क्या तुम षिप्पेय तरो को जानते हो?" मगर एक भी उसका पता बता न पाया। वह निराश हो एक गली के बाजू में एक पत्थर पर बैठ गया। तभी उस ओर एक बछड़े के बराबर का बड़ा कुत्ता आ निकला। उसके पीछे उस कुत्ते का मालिक "षिप्पेय तरो" पुकारते चला आ रहा था।

गुरु का उत्साह उमड़ पड़ा। उसने कुत्ते के मालिक को लड़की की बलि का समाचार सुनाकर पूछा–"एक लड़की की जान बचाने के लिए क्या आप अपने

कुत्ते को दो-चार दिन के लिए मुझे उधार में दे सकते हैं?" कुत्ते का मालिक बड़ी खुशी के साथ कुत्ता देने को तैयार हो गया। उस कुत्ते को साथ ले गुरु बड़ी शीघ्रता से पहाड़ की ओर चल पड़ा।

उधर गाँव में लड़की की बलि देने का दिन निकट आ गया था। पर गुरु का कहीं पता न था। इसलिए उस लड़की के माता-पिता लड़की की बलि की तैयारी करने लगे। उस लड़की को रखने के लिए लकड़ी की एक लंबी पेटी मंगवायी गयी। उसकी मौत के निशान के रूप में सफ़ेद वस्त्र पहना कर उस लड़की को पेटी में लिटाया गया। उस पेटी को उठाकर पहाड़ पर ले जाने के लिए चार आदमी आगे बढ़े, तभी गुरु कुत्ते के साथ हाँफते हुए वहाँ आ पहुँचा।

दुख के कारण पागल होनेवाली लड़की को गुरु के आदेश पर पेटी में से निकाला गया। उसके बदले गुरु और कुत्ते को पेटी में रख कहार पेटी को पहाड़ पर उठा ले गये। पेटी को मंदिर के पास रख कहार लौट गये।

आधी रात के समय पिशाचों की भीड़ आयी। सब पेटी को चारों तरफ़ घेर कर गाने लगे-"षिप्पेय तरो से मत कहो।"

कुछ पिशाचों ने पेटी का ढक्कन खोल दिया। दूसरे ही क्षण कुत्ता ज़ोर से भूंकते हुए पिशाचों पर हमला कर बैठा। गुरु भी बाहर निकल कर अंधाधुंध पिशाचों को मारने लगा। कई पिशाच गुरु के हाथों में कटकर ज़मीन पर लोटने लगे।

दूसरे दिन जब सवेरा हुआ तब गाँववालों ने सोचा कि 'अब तक देवी ने गुरु को निगल लिया होगा।' मगर पहाड़ पर पहुँच कर उन लोगों ने देखा कि मंदिर के चारों तरफ़ मर्कट जैसे प्राणियों के शव तितर-बितर फैले हुए हैं। गुरु कुत्ते के साथ सुरक्षित पहाड़ से उतर रहा है।

उस दिन से गाँववालों ने मनुष्यों की बलि देना बंद किया।
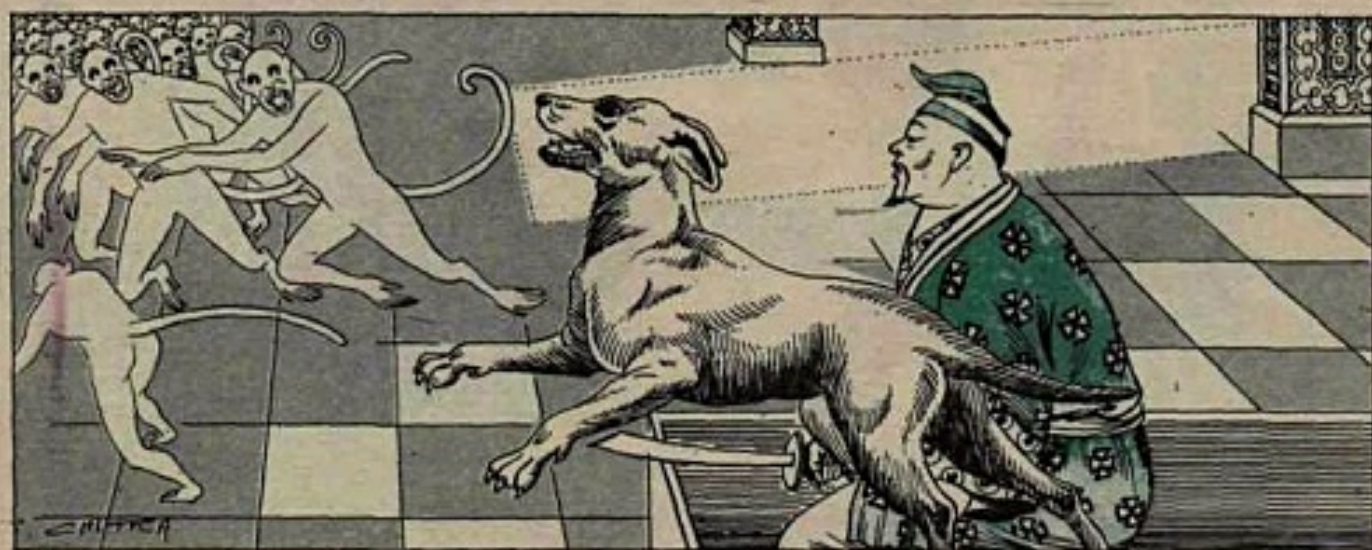
# रसोई में प्रवीणता

गौतमी नगर का राजकुमार जब शादी करने योग्य बना तब वह राजकुमारी की खोज में चल पड़ा। उसने कई राजकुमारियों को देखा। सब से वह यही सवाल करता कि 'तुम क्या क्या पदार्थ बनाना जानती हो?' वे राजकुमारियाँ जवाब देतीं कि हम अमुक प्रकार के पदार्थ बनाना जानती हैं। इससे वह प्रसन्न न होता और दूसरे देश में चला जाता।

आख़िर वह पूर्णिमा नगर में पहुँचा और वहाँ की राजकुमारी से पूछा–"तुम क्या क्या रसोई बनाना जानती हो?"

"आप शायद यह नहीं जानते कि किससे क्या पूछना है? मैं तो महारानी हूँ। आज तक मैंने न रसोई बनायी और न बनाऊँगी।" राजकुमारी ने जवाब दिया।

राजकुमार ने उस राजकुमारी के साथ शादी करने की अपनी स्वीकृति दी।

—रवीन्द्रकुमार भुवाल्का

# चिरायु

एक राजा के तीन बेटे थे। उनमें तीसरे बेटे का नाम कुशल था। उसने एक दिन अपने पिता से कहा—"पिताजी, मैं देशाटन करना चाहता हूँ। मुझे थोड़ा धन और एक घोड़ा दिला दें तो मैं देशाटन करूँगा और अपनी पसंद की कन्या के साथ विवाह करके लौटूंगा।"

इस पर राजा ने कोई आपत्ति नहीं की। कुशल पर्याप्त धन लेकर घोड़े पर सवार हो देशाटन पर चल पड़ा। नगर को पार करते ही एक बगीचा दिखाई पड़ा। उस बगीचे में कुशल ने एक जगह अपना अधिकांश धन गाड़ दिया और वहाँ से चल पड़ा। कुशल कई शहरों और देशों में गया, मगर उसे अपनी पसंद की कन्या कहीं दिखाई न दी। इस तरह आठ साल तक देशाटन करके वह पक्षियों के राज्य में गया।

पक्षियों की रानी जवानी में थी और सुंदर भी थी। कुशल को देख रानी ने पूछा—"कहो, कैसे आना हुआ?"

"जिस देश में बुढ़ापा नहीं, उस देश की कन्या के साथ विवाह करने के लिए आया हूँ।" कुशल ने जवाब दिया।

पक्षियों की रानी ने हँसकर उत्तर दिया—"इस देश में बुढ़ापा नहीं है।"

"तुम कैसे बता सकती हो कि इस देश में बुढ़ापा नहीं है?" कुशल ने पूछा।

"इस जंगल को देखते हो न? इसे पूरा काट देने पर ही इस देश में बुढ़ापा प्रवेश कर सकता है।" रानी ने कहा।

"तब तो मैं इस देश में नहीं रह सकता। कभी न कभी ये सारे पेड़ काटे जायेंगे। तब इस देश में बुढ़ापा प्रवेश करेगा।" यह जवाब देकर कुशल पक्षियों की रानी से विदा ले आगे बढ़ा।

सुधाकर पांडे

और आठ साल तक देशाटन करके कुशल एक काँसे के क़िले में पहुँचा। उस क़िले से एक सुंदर युवती बाहर आयी और कुशल को देख बोली—"मैं तुम्हारा स्वागत करती हूँ। मैं कई सालों से तुम्हारा इंतज़ार करती हूँ।"

वह युवती कुशल के घोड़े को घुड़साल में ले गयी। उसे दाना खिलाकर कुशल के पास लौट आयी। उस रात को कुशल उस युवती का मेहमान बना रहा। सवेरे उठकर अपने घोड़े पर सवार हो चल पड़ा।

कुशल के रवाना होते देख उस युवती ने पूछा—"तुम कहाँ जा रहे हो?"

"जहाँ बुढ़ापा न हो, वहाँ जा रहा हूँ।" कुशल ने जवाब दिया।

"तब तो तुम यहीं रह सकते हो। यहाँ बुढ़ापा नहीं है।" युवती ने कहा।

"तुम कैसे बता सकती हो? इसका सबूत क्या है?" कुशल ने पूछा।

"उन पहाड़ों को देखते हो न? जब तक वे पूरे घिस न जायेंगे, तब तक यहाँ पर बुढ़ापा प्रवेश नहीं कर सकता।" युवती ने जवाब दिया।

"कभी न कभी वे पहाड़ घिस जायेंगे। तब बुढ़ापा ज़रूर प्रवेश करेगा।" यह जवाब देकर कुशल आगे बढ़ा।

कई दिन की यात्रा के बाद कुशल ने एक जगह एक झोंपड़ी देखी। वह सीधे झोंपड़ी के भीतर चला गया। एक युवक ने कुशल से पूछा—"तुम क्या चाहते हो?"

"मैं उस जगह को ढूंढ़ रहा हूँ, जहाँ बुढ़ापा नहीं है।" कुशल ने जवाब दिया।

"वह जगह यही है। तुमको जहाँ पहुँचना चाहिए था, वहाँ पहुँच गये। यहाँ पर बुढ़ापा प्रवेश ही नहीं कर सकता।" युवक ने जवाब दिया।

"तो तुम कौन हो?" कुशल ने पूछा।

"मैं पवन हूँ। तुम मानवों की दुनिया को पार कर बहुत ही दूर चले आये हो।" युवक ने कहा।

"तुम मान जाओगे तो मैं सदा के लिए यहीं रह जाऊँगा।" कुशल ने कहा।

कुशल उसी झोंपड़ी में कई वर्षों तक रहा। उसकी उम्र बिलकुल बढ़ी नहीं। वह झोंपड़ी से बाहर कभी नहीं गया, मगर पवन बराबर झोंपड़ी से बाहर चला जाता और लौट आता।

हमेशा झोंपड़ी में रहते कुशल ऊब गया। यह बात पवन ने भांप ली, उसे समझाते हुए बोला—"चाहे तो तुम बाहर जाकर टहल आओ। मगर याद रखो, यहाँ से थोड़ी ही दूर पर पश्चात्ताप नामक एक घाटी है। उसमें भूल से भी न उतरना। वह घाटी देखने में सुंदर दिखाई देगी। फिर भी तुम्हारा वहाँ जाना उचित न होगा।" पवन इस प्रकार कुशल को चेतावनी दे बाहर चला गया।

यह बात सुनते ही कुशल के मन में उस घाटी को देखने की इच्छा पैदा हुई। वह जिस जगह रहता है, वहाँ पर बुढ़ापा

तो नहीं है, मगर और कोई बात भी तो नहीं है। जगह भी सुंदर नहीं है। मगर पश्चात्ताप की घाटी में कई विचित्र बातें हो सकती हैं। यह सोचकर कुशल उस घाटी की ओर चल पड़ा।

लेकिन पश्चात्ताप की घाटी में क़दम रखते ही कुशल दुख से भर उठा। वह एकदम रो पड़ा। रोने से उसका मन थोड़ा शांत हुआ। आज तक वह दुख से दूर रहा। आज अचानक दुख ने उसे घेर लिया। वह पछताने लगा–"मैंने अपने पिता और भाइयों को त्याग दिया। दो सुंदर युवतियों के साथ शादी करने का जो मौक़ा मिला, उसे भी मैं खो बैठा। आखिर मैं एकाकी बना। मेरा जीवन रूपी वृक्ष ठूंठ बन गया है।"

एकाकीपन से दुखी हो कुशल झोंपड़ी के पास लौट आया और पवन से बोला– "मैं अपने घर जाकर अपने पिता और भाइयों को देखना चाहता हूँ।"

"तुम जाओ मत। जाने पर भी कोई फ़ायदा न होगा।" पवन ने समझाया।

मगर कुशल ने पवन की बात नहीं मानी। वह अपने घोड़े पर सवार हो चल पड़ा। जब वह कांसे के दुर्ग के पास पहुँचा तब एक अधेड़ उम्र की औरत उसके सामने आयी और बोली–"तुम आज आये, लेकिन फ़ायदा ही क्या? यहाँ पर बुढ़ापा आ रहा है। उन पहाड़ों को देखो। क़रीब क़रीब घिसकर ज़मीन को छू रहे हैं।"

"सच है। मुझे तो यहीं पर रह जाना चाहिए था। अपनी भूल पर मैं पछता रहा हूँ।" ये शब्द कहकर कुशल उस औरत से विदा ले चल पड़ा। कुछ समय बाद वह पक्षियों की रानी के पास पहुँचा। वहाँ का सारा जंगल काट दिया गया था। केवल दो-एक पेड़ बच रहे थे। पक्षियों की रानी भी अधेड़ उम्र की हो गयी थी।

"तुम देरी से आये! अपनी जवानी की रक्षा करके क्या तुम सुखी हो गये?" रानी ने कुशल से पूछा।

"मैं बिलकुल सुखी न हो सका। यही मेरे दुख का कारण है, मुझे भी एक मानव की सी ज़िंदगी जीना चाहिए था।" कुशल ने जवाब दिया।

वहाँ से निकलकर कुशल अपने पिता के राज्य में पहुँचा। मगर वहाँ न कोई नगर था और न राजमहल ही। खेत बच रहे थे।

एक बूढ़े को देख कुशल उसके पास पहुँचा और पूछा—"क्या तुम यह बता सकते हो कि यहाँ पर मेरे पिता का जो महल था, वह क्या हुआ?"

"तुम्हारे पिता कौन हैं?" बूढ़े ने आश्चर्य में आकर पूछा।

कुशल ने अपने पिता का सारा विवरण कह सुनाया। बूढ़े को बड़ा गुस्सा आया।

"तुम जिस राजवंश की बात कहते हो, उसके बारे में कभी मेरे दादा और परदादा ने भी कुछ नहीं कहा था। तुम मेरे साथ मजाक़ तो नहीं कर रहे हो?" बूढ़े ने कहा।

"मैं सच्ची बात बता रहा हूँ। मैंने यहीं कहीं धन गाड़कर रखा था। उसे देखोगे तो तुम मेरी बातों पर यक़ीन करोगे।" इन शब्दों के साथ कुशल ने उस जगह को ढूँढ़कर उसका पता लगाया। अपना धन बाहर निकाला। मगर उस धन के पीछे बुढ़ापा छिपा था। बुढ़ापे ने उसे पकड़कर कहा—"ओह, तुम कितने समय बाद मेरे हाथों में आये।" इसके बाद बुढ़ापा उसे ज़मीन के अंदर खींच ले गया।

गड्ढे के बाहर बैठे बूढ़े ने उन सिक्कों की जाँच की और कहा—"ये सिक्के तो इस युग के नहीं हैं।" उसने आँख उठाकर देखा, तो गड्ढा खोदनेवाले का पता न था।

"ओह, इस दुनिया में कितनी विचित्र बातें हैं।" बूढ़ा गुनगुना उठा।

# ब्रह्मराक्षस

एक गाँव में एक दुष्ट जमीन्दार रहा करता था। उस गाँव के पास एक जंगल था। उस जंगल से होकर जो भी यात्रा करते, उन्हें जमीन्दार मरवा डालता और उनकी सारी संपत्ति हड़प लेता। इसलिए ज्यादा धन लेकर उस जंगल से यात्रा करना खतरे से खाली न था।

एक बार एक महा पंडित राजा से सम्मान पाकर उस धन को लेकर जमीन्दार के गाँव से जंगल के उस पार वाले अपने गाँव को लौट रहा था। जमीन्दार के नौकरों ने उस पंडित को मार डाला और उसके धन को हड़प लिया। उस पंडित की लाश को जंगल में कहीं गाड़ दिया, जिससे किसी को यह पता न चला कि पंडित की क्या हालत हो गयी।

कुछ साल बीत गये। मरे हुए पंडित के पुत्र ने अपने दस साल के बेटे को जमीन्दार वाले गाँव के एक गुरु के पास पढ़ने के लिए भेजा। वह लड़का जंगल के रास्ते चला जा रहा था, तब एक बूढ़ा ब्राह्मण उसके सामने आया और बोला—"बेटे, तुम मेरे साथ चलो, मैं तुम्हारी मदद करूँगा।" लड़का बूढ़े ब्राह्मण के साथ घने पेड़ों के बीच चला गया।

बूढ़े ब्राह्मण ने एक गड्ढे से एक लोटा निकालकर लड़के के हाथ दिया और कहा—"बेटा, इस लोटे भर में सोना है। इसे तुम सावधानी से रखो। जब तुम इस जंगल को पार कर गाँव तक पहुँचोगे, तब तक अंधेरा फैल जायगा। तुम जमीन्दार के घर जाकर रात भर सोने के लिए जगह माँगो।" यह कहकर बूढ़ा ब्राह्मण चला गया। लड़के ने लोटे पर बंधा कपड़ा खोलकर देखा तो उसमें सचमुच सोने के सिक्के थे। बिना माँगे जिस ब्राह्मण ने

विनय मोहन

उसे इतना धन दिया था, उसकी उदारता की मन ही मन प्रशंसा करते लड़का अपने रास्ते चला गया।

लड़का जब जमीन्दार के गाँव में पहुँचा, तब तक अंधेरा फैल चुका था। वह जमीन्दार के घर पहुँचा और रात-भर सोने की जगह माँगी। जमीन्दार ने भी मान लिया।

रात को जब लड़का सो गया, तब जमीन्दार उसके कमरे में आया। लोटा ऊपर उठाया। वह भारी था। जमीन्दार ने लोटे पर का कपड़ा खोल दिया तो देखता क्या है, उसमें सोना भरा है।

जमीन्दार सोचने लगा—इस छोटे से लड़के को इतना सारा सोना कैसे मिला? यह लड़का उस सोने को क्या करेगा? इसे किसने यह सोना दिया? इन सब की तहकीक़ात करने का अधिकार जमीन्दार को है। मगर उसने सोचा कि चुपचाप यह सोना हड़प ले तो काम बन जायगा। तहकीक़ात कराने से क्या फ़ायदा है?

यह सोचकर जमीन्दार ने लोटे के सारे सिक्के ले लिये, लोटे पर फिर से कपड़ा बाँध दिया और चुपचाप जाकर आराम से सो गया।

दूसरे दिन सवेरे उठकर लड़के ने लोटा हाथ में लिया तो देखता क्या है, वह बहुत ही हल्का है। कपड़ा खोलकर देखा तो उसमें सोने के सिक्के नहीं हैं। उसने जमीन्दार के पास जाकर शिकायत की—"साहब, मेरे लोटे में सोने के सिक्के थे, किसी ने उन्हें चुरा लिया है।"

"अरे बदतमीज, तुम मुझपर चोरी का इलज़ाम लगाते हो? इस अपराध के लिए तुमको फाँसी के तख़्ते पर लटकवा दूंगा।" जमीन्दार ने लड़के को डाँटा और उसे एक कमरे में बंद करवा दिया।

इसके बाद जमीन्दार ने गाँव के प्रमुख लोगों को बुला भेजा जो उसकी हाँ में हाँ मिला देते थे, सारी बातें बताकर पूछा—"मुझ पर जो चोरी का इलज़ाम लगाता

है, उसे फाँसी पर चढ़ाना तुम लोग सही मानते हो न?"

"इसमें शक ही क्या है? जरूर उसे फाँसी पर चढ़ाना चाहिए। नहीं तो हर छोटे लड़के की नजर में आप गिर जायेंगे।" गाँव के प्रमुखों ने बताया।

यह ढिंढोरा पिटवाया गया कि लड़के को फाँसी पर चढ़ाया जा रहा है। उस दिन शाम को फाँसी देखने लोगों की बड़ी भीड़ जमा हो गयी। लड़के को फाँसी के तख्ते पर चढ़ाने के लिए लाया गया। निकट रहकर सज़ा को अमल कराने के लिए खुद जमीन्दार भी वहाँ आ पहुँचा।

उस वक्त भीड़ में से एक ब्राह्मण जमीन्दार के निकट आया और पूछा–"क्या इसी लड़के को फाँसी के तख्ते पर चढ़ाया जा रहा है? इसने क्या किया?"

"यह पूछने के लिए तुम कौन होते हो?" जमीन्दार ने ब्राह्मण से पूछा।

"मैं उसका दादा हूँ। यह मेरा पोता है।" ब्राह्मण ने जवाब दिया।

"तब तो सुनो, तुम्हारे पोते ने मुझ पर चोरी का इलज़ाम लगाया है। मैंने एक दिन रात को इस पर मेहरबानी करके इसे अपने घर सोने की जगह दी। बदले में यह कहता है कि मैंने इसका सोना हड़प लिया है। इसने मेरी इज्ज़त धूल में मिला दी। इसलिए मैं इसको कड़ी सज़ा दूँगा।" जमीन्दार ने बताया।

"तो आप एक काम कीजियेगा। आप यह शपथ कीजिए कि इस लड़के का इलज़ाम सही हो तो आप को ब्रह्मराक्षस उठा ले जावे। तब लोगों को विश्वास होगा कि आपने लड़के के साथ न्याय किया है।" ब्राह्मण ने समझाया।

"इसमें मुझे कोई एतराज़ नहीं। मैं शपथ करता हूँ कि इस लड़के का इलज़ाम सही हो तो ब्रह्मराक्षस मुझे उठा ले जाय।" जमीन्दार ने कहा।

दूसरे ही क्षण वह ब्राह्मण जमीन्दार को उठाकर वायु वेग के साथ जंगल की ओर भाग गया। इसके बाद जमीन्दार का क्या हुआ, किसी को भी पता न चला।

# अलीबाबा-चालीस चोर

[ २ ]

कासिम की बीबी ने जो युक्ति की, उसका परिचय अपने शौहर को दिया और कहा–"हमें यह सब देखते चुप नहीं रहना चाहिए। तुम जल्दी अलीबाबा के घर जाओ और पता लगाओ कि उस कमबख्त को यह सारा सोना कैसे मिला?"

कासिम ने अपनी औरत की बातों से जान लिया कि अलीबाबा को कहीं से कोई खज़ाना मिल गया है। वह यह सोचकर खुश नहीं हुआ कि उसके छोटे भाई की दरिद्रता दूर हुई, उल्टे उसे ईर्ष्या हुई। इसलिए असली बात का पता लगाने वह अपने छोटे भाई के घर की ओर भाग खड़ा हुआ।

कासिम जब अलीबाबा के घर पहुँचा तब अलीबाबा के हाथ में कुदाल था। कासिम ने गरजकर कहा–"अरे, गधे हाँकने वाले, तुम मुझसे छिपाते हो? हमारी आँख बचाकर सोना मापते हो और देखने में कंगाली का नाटक रचते हो?"

कासिम की बातें सुनकर अलीबाबा को बड़ा रंज हुआ। उसने शांत स्वर में कहा–"भैया, तुम जो कहते हो, मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। तुमने आज तक मेरी परवाह तक न की, फिर भी तुम क्या जानना चाहते हो, साफ़ साफ़ बता दो। मैं सच्ची बात बता दूंगा।"

"अपनी चालाकी छिपाने की कोशिश न करो। तुम जो छिपाते हो, वह मैं जानता हूँ।" इन शब्दों के साथ कासिम ने चर्बी से चिपके दीनार को दिखाते हुए कहा–"तुमने ऐसे कितने दीनार छिपा रखे हैं? कहाँ से ये सब चुराया?" इसके बाद अपनी औरत ने जो युक्ति की थी, कासिम ने उसका परिचय दिया।

अरब की लोक कथा

रहस्य खुल गया था। इसलिए अलीबाबा ने कहा-"भैया, अल्लाह बड़ा ही रहम दिल है। अपने भक्तों को वह जो देना चाहता है, सो देता है। यह सब उसी की मेहरबानी है।" इसके बाद उसने जंगल की सारी कहानी कासिम को कह सुनायी। मगर वह मंत्र नहीं बताया। आखिर उसने कासिम से फिर कहा- "भैया, हम दोनों एक ही माँ के बच्चे हैं। मेरी संपत्ति तुम्हारी भी है। गुफ़ा से मैं जो कुछ सोना लाया हूँ उसमें से आधा हिस्सा तुमको भी देता हूँ।"

मगर कासिम अव्वल दर्जे का लोभी था। उसने कहा-"तुम तो यही कहोगे, मैं जानता हूँ। मैं उस गुफ़ा तक जाने का रास्ता जानना चाहता हूँ। मुझे धोखा देने की कोशिश करोगे तो मैं सरकारी अफ़सरों को बता दूँगा कि तुम भी उन लुटेरों के दल में शामिल हो गये हो।"

अलीबाबा ने सोचा कि उसका भाई उसे अफ़सरों के हाथों में पकड़ा देगा तो उसकी बीबी और बच्चों का बुरा हाल होगा। सोचकर वह डर गया और गुफ़ा को खोलने व बंद करने का उपाय बताया।

गुफ़ा की सारी निधियों को खुद लाने की इच्छा कासिम के दल में पैदा हुई। वह अपने छोटे भाई से कहे बगैर जल्दी-जल्दी अपना घर लौटा। दूसरे दिन सवेरे मुँह अंधेरे दस खच्चरों पर दस खाली पेटियाँ बांधे जंगल की ओर चल पड़ा। उसका विचार था कि खज़ाने का पूरा पता लगा के लौटे और दुबारा ऊँटों का दल लेकर सारा खज़ाना उठा लावे। अलीबाबा ने उसे समझाया कि वह भी उसके साथ जायगा। मगर कासिम ने साफ़ इनकार किया और अलीबाबा के बताये रास्ते पर गुफ़ा तक पहुँचा।

गुफ़ा के द्वार पर एक बड़ी चट्टान थी, उसके ऊपर के टीले पर एक बड़ा पेड़ था। कासिम ने अपने दोनों हाथ चट्टान की ओर फैलाकर कहा-"खुल जा सम

सम!" तुरंत चट्टान खुल गयी। कासिम ने अपने दस खच्चरों को पेड़ों से बांध दिया, तब गुफ़ा के भीतर जाकर मंत्र पढ़ा। दूसरे ही क्षण चट्टान बंद हो गयी। अगर उसे होनेवाले खतरे का ख्याल होता तो वह ऐसा न करता।

गुफ़ा के भीतर सोने व रंगबिरंगे रत्नों के ढ़ेर देखकर कासिम की आँखें चौंधिया गयीं। उसका दिल यह चाहने लगा कि सारे धन पर उसी का क़ब्ज़ा हो। उसने जान लिया कि उस सारे खज़ाने को ले जाने के लिए ऊँटों का एक दल पर्याप्त नहीं है, बल्कि कई दल चाहिए। फिलहाल उसने दस पेटियों को भरने लायक़ धन का संग्रह किया। तब दर्वाज़े की ओर घूमकर चिल्ला उठा–"खुल जा, जौ।"

रत्नों के उन ढ़ेरों को देखने पर कासिम भ्रम में पड़ गया। उसे असली मंत्र की याद न आयी। इसलिए वह बार बार "खुल जा जौ" चिल्लाता रहा। पर दर्वाज़ा न खुला। उसने सभी अनाजों के नाम ले लेकर चिल्लाना शुरू किया।

फिर भी चट्टान नहीं खुली। उस चट्टान को खुलते न देख कासिम का दिल धड़कने लगा। भगवान कभी न कभी दुष्टों को दण्ड देने के लिए उनके दिमागों में नशा चढ़वा देता है। कासिम कई प्रयत्न करके भी दर्वाज़े को खोल न पाया। आखिर वह यह सोचकर सारी गुफ़ा में चक्कर काटने

लगा कि कहीं बाहर जाने का मार्ग मिल जाय। मगर कहीं उसे कोई रास्ता दिखाई न दिया।

ठीक दुपहर के समय चालीस चोर गुफ़ा के द्वार पर पहुँचे। उन लोगों ने बाहर पेड़ों से बंधे दस खच्चरों और खाली पेटियों को देखा। सब अपने हाथों में तलवार लिये चट्टान के पास पहुँचे। चोरों के सरदार ने अपनी तलवार को चट्टान की ओर बढ़ाकर कहा–"खुल जा सम सम।" तुरंत चट्टान खुल गयी।

चोरों की चिल्लाहट और घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनते ही कासिम ने सोचा कि दर्वाज़े के खुलने तक किसी कोने में छिपे रहे और चट्टान के खुलते ही भाग जाय। मगर वह इस कोशिश में चोरों के हाथों में पड़ गया। चोरों ने पल भर में कासिम के शरीर को छे टुकड़ों में काट डाला। इस तरह कासिम की ज़िंदगी खतम हो गयी, इसके बाद चोर अपनी तलवारों को ले भीतर गये। थैलियों में कासिम के द्वारा भरे हुए धन को लुढ़का दिया। लेकिन अलीबाबा जो धन ले गया था उसका पता वे न लगा सके। इस घटना के संबंध में चोरों ने सलाह-मशविरा किया, पर उन्हें असली बात का पता न लगा। इससे ज्यादा वे सोच नहीं पाये, इसलिए फिर से लूटमार करने के लिए वे चल दिये।

कासिम यों तो मरने के क़ाबिल ही था, मगर उसकी मौत का असली कारण उसकी औरत ही कहा जा सकता है। कासिम की बीबी ने मापनेवाले बर्तन के नीचे चर्बी चिपका दी, इसका नतीजा यह हुआ कि कासिम का शरीर छे टुकड़ों में कट गया। कासिम की बीबी यह सोचकर दावत का खाना तैयार करके इंतज़ार करने लगी कि उसका शौहर बहुत-सा धन लेकर लौट आयेगा। अंधेरा फैल जाने के बाद भी उसके न लौटते देख वह घबराने लगी। वह अपने अहंकार को

छोड़ अलीबाबा के घर जाकर बोली–"देवर, तुम्हारे भाई अभी तक जंगल से नहीं लौटे हैं। तुम तुरंत जाकर पता लगा करके लौट आओगे?"

अलीबाबा रहम दिल था। वह भी अपने बड़े भाई के बारे में सोचकर घबराने लगा। वह भर्राई आवाज में बोला–"भाभीजी! अल्लाह भाई की रक्षा करे! मैंने उन्हें समझाया कि साथ चलूंगा। मगर उन्होंने मेरी बात नहीं मानी। तुम घबराओ नहीं, शायद भाई साहब रात गये गाँव में लौटना चाहते हो।" इसके बाद समझाया–"इस अंधेरे में जाने से कोई प्रयोजन न होगा। सवेरे उठकर चला जाऊँगा। रात को तुम यहीं पर सो जाओ।"

सवेरा होते ही अलीबाबा अपने तीनों गधों को लेकर जंगल में गया। गुफ़ा के पास पहुँचा तो उसे अपने भाई के खच्चर कहीं दिखाई न दिये। चट्टान के पास खून के धब्बों को देखते ही उसे असली बात मालूम हो गयी। कांपते स्वर में अलीबाबा बोल पड़ा–"खुल जा सम सम!" तुरंत चट्टान खुल गयी। भीतर पहुँचते ही उसने देखा कि उसके भाई का शरीर छे टुकड़ों में काट दिया गया है। वह एकदम कांप उठा।

अपने भाई के शरीर की अंत्येष्ठि क्रियाएँ करनी थीं, इसलिए गुफ़ा से अलीबाबा दो बोरे ले आया। उनमें कासिम के शरीर के टुकड़ों को रखा।

उन बोरों को अपने एक गधे पर बांध दिया। बोरों पर पत्ते और टहनियों को ढक दिया। इसके बाद बाक़ी दोनों गधों पर दीनारों से भरे बोरे बांध दिये। तब गुफ़ा का द्वार बंद करके चिंता के साथ घर लौट गया।

अलीबाबा अपने गधों को घर के अहाते में ले आया। बोरों को उतारने के लिए मर्जीना नामक अपनी एक गुलाम लड़की को पुकारा। मर्जीना जब छोटी-सी लड़की थी, तभी अलीबाबा की औरत ने उसे अपने घर आश्रय दिया और अपनी ही बेटी की तरह पाल-पोसकर बड़ा किया। वह शादी के योग्य हो गयी। दस लोगों का काम अकेली कर देती थी। वह स्वभाव से जितनी भली थी, अक्ल में उतनी ही बढ़ी चढ़ी थी। बड़ी-सी बड़ी समस्या को भी वह अपनी विवेकशीलता से बात की बात में हल कर देती थी।

अलीबाबा की पुकार सुन मर्जीना छत पर से नीचे उतर आयी।

"बेटी मर्जीना, आज तुम को अपनी अक्लमंदी का परिचय देना होगा।" इन शब्दों के साथ अलीबाबा ने अपने भाई की सारी हालत बताकर समझाया—"भाई के शरीर के टुकड़े तीसरे गधे पर हैं। मैं अपनी भाभी के पास जाकर यह दुखद समाचर सुनाऊँगा। इस बीच में तुम सोचकर ऐसा उपाय करो कि इसकी मामूली मौत हो गयी है। ऐसा नाटक रचकर इसको दफ़नाने का उपाय सोचो।"

मर्जीना ने मान लिया। अलीबाबा दूसरी मंजिल पर गया।

अलीबाबा का चेहरा देखते ही कासिम की बीबी ने भाँप लिया कि कोई अनहोनी हुई है। वह रो पड़ी। बाल नोचकर पागल की भाँति चिल्लाने लगी। अलीबाबा ने जल्दी जल्दी संक्षेप में सारी बातें समझायीं और कहा—"सुनो भाभी, अब मेरे पास काफ़ी धन है। तुम्हारी इस विपत्ति के समय मदद देने के लिए मैं

अपने धन में से तुम्हारा हिस्सा दे दूँगा। तुमको कोई एतराज न हो तो तुम मेरे ही घर में रह सकती हो। मेरी औरत तुमको अपनी दीदी की तरह देखेगी। हम सब आराम के साथ अपने दिन बिता सकते हैं।"

अलीबाबा के अच्छे व्यवहार को देख कासिम की बीबी ने अपनी दुष्टता का व्यवहार बदल लिया। वह अलीबाबा के कहे मुताबिक़ करने को तैयार हो गयी। इस तरह अलीबाबा अपनी भाभी को समझा-बुझाकर नीचे उतर आया।

इस बीच मर्जीना ने एक उपाय सोचा और उसे अमल करने का काम भी शुरू किया। एक दवाइयों की दूकान में जाकर खतरनाक ज़हर को उगालने के लिए उसने दवा माँगी।

"दवा किसके लिए?" दूकानदार ने मर्जीना से पूछा।

मर्जीना ने गहरी साँस लेकर कहा—"उफ़! और किसके लिए? मेरे मालिक के बड़े भाई को जहरीले नाग ने डस लिया है। उनको हमारे घर ले आये हैं। हमने कई तरह की दवा दारू की। मगर कोई फ़ायदा न रहा। उनका चेहरा पीला पड़ गया है। आँखें दिखाई नहीं देतीं। आदमी में चेतना भी नहीं है। तुम्हारी दवा पर ही भरोसा रखके बैठे हैं।" इसके बाद मर्जीना दवा लेकर घर लौटी।

मर्जीना की चाल को देख अलीबाबा भी दंग रह गया।

दूसरे दिन सवेरे मर्जीना उस दूकानदार के पास रोते हुए पहुँची और कहा—"साहब, उस दवा से कोई फ़ायदा न रहा।" फिर दूसरी दवा लेकर घर लौटते उसने गली के सब लोगों को यह दुखद समाचार दिया। इसलिए अलीबाबा के घर से रोने-धोने की आवाज़ें सुनकर किसी को आश्चर्य नहीं हुआ। सब ने यही सोचा कि शायद कासिम मर गया है।

कासिम की मौत को सहज साबित करने के लिए मर्जीना ने जो नाटक रचा,

उससे वह संतुष्ट नहीं हुई। कासिम के शरीर के जो छे टुकड़े हुए थे, उसे लोगों से छिपा रखने का उसने निश्चय किया। इसलिए वह एक दूसरे मुहल्ले में गयी। एक कोने में चप्पल सीनेवाले के पास जाकर मर्जीना ने झट उसके हाथ एक दीनार रख दिया और बोली—"शेख मुस्तफ़ा! आज तुमको अपनी होशियारी दिखानी होगी, समझे!"

"तुमने आज अच्छा बोहनी किया, बताओ री, मुझे क्या करना होगा?" मुस्तफ़ा ने पूछा।

"चमड़े सीने के लिए जो कुछ सामग्री चाहिए, वह सब लेकर मेरे साथ चलो। मगर याद रखो, मैं तुम्हारी आँखों पर पट्टी बाँध कर ले जाऊँगी। इसे तुमको मानना होगा।" मर्जीना ने जवाब दिया।

"अरी, एक दीनार देकर मुझ से ऐसा काम कराना चाहती हो जिसे मुझे नहीं करना चाहिए।" मुस्तफ़ा ने पूछा।

"लो, एक और दीनार देती हूँ। तुम को केवल चमड़ा सीना होगा।" मर्जीना ने मुस्तफ़ा के हाथ में एक और दीनार रखते कहा।

मुस्तफ़ा खुश हो गया। मर्जीना के हाथों से आँखों पर पट्टी बंधवाकर चल पड़ा। अलीबाबा के घर के तहखान में पहुँचने पर उसकी पट्टी खोल दी गयी। मुस्तफ़ा को कासिम के शरीर के छे टुकड़ों को दिखाते हुए मर्जीना ने उसके हाथ में एक और दीनार रखकर कहा—"सुनो, तुमको इस शव के टुकड़ों को मिलाकर सीना होगा। काम जल्दी करोगे तो तुमको एक और दीनार मिलेगा, समझें।"

मुस्तफ़ा अपनी क़िस्मत पर फूला न समाया। जल्दी जल्दी उसने कासिम के शरीर के टुकड़ों को सी दिया। मर्जीना ने चौथा दीनार मुस्तफ़ा के हाथ में रखकर उसकी आँखों पर पट्टी बांध दी। फिर उसे अपनी दूकान पर छोड़कर घर लौट आयी। (और है)

दुर्योधन के मन में पांडवों के प्रति जो ईर्ष्या पैदा हुई जिसके कारण वह मन ही मन व्याकुल रहने लगा। धीरे धीरे उसकी तबीयत बिगड़ने लगी। उसकी यह हालत देख शकुनि ने पूछा–"दुर्योधन, तुम कमज़ोर क्यों होते जा रहे हो? आखिर तुम किस बात के लिए परेशान हो?"

इस पर दुर्योधन ने कहा–"मामाजी, क्या बताऊँ? अर्जुन के पराक्रम के बल पर युधिष्ठिर ने सारे देश जीत लिये और राजसूय-याग करके एक साम्राज्य स्थापित किया। भरी सभा में कृष्ण ने शिशुपाल का वध किया, तो सभी राजा मौन रहें। सभी राजाओं ने रत्नों के ढेर लाकर पांडवों के चरणों पर डाल दिये। उनके ऐश्वर्य के सामने मैं किसी काम का नहीं रहा। तुमने देखा ही है कि मय सभा देखते समय उन लोगों ने मेरा कैसे मजाक़ उड़ाया? मुझे यह ज़िंदगी फीकी मालूम होती है। यह बात तुम मेरे पिताजी को बतला दो।"

दुर्योधन की बातें सुनकर शकुनि ने उसे समझाया–"पांडवों का वैभव देख तुम ईर्ष्या क्यों करते हो? उन लोगों ने सारी संपत्ति जो इकट्ठी की, वह सही ढंग से इकट्ठी की है। उनके पक्ष में देवताओं का बल है। इसीलिए तुमने उनका निर्मूलन करने के जो भी प्रयत्न किये, सब विफल हो गये। द्रौपदी का उनकी पत्नी होना उनके लिए बड़े भाग्य की बात थी।

२४. कपट जुआ

"तब तो हम पांडवों से युद्ध करके उनकी मय सभा को क्या हस्तिनापुर ले आवें?" दुर्योधन ने पूछा।

"दुर्योधन, पांडवों को हराना इतना सरल काम नहीं है। युद्ध ही क्यों करें? इससे सरल उपाय मैं तुम्हें बता देता हूँ। सुनो! युधिष्ठिर जुआ खेलना बहुत पसंद करते हैं। उनको जुआ खेलने को निमंत्रण दो। मैं उनको जुएँ में हराकर उनके राज्य, और संपत्ति हड़प कर तुमको सौंप दूंगा। मगर धृतराष्ट्र की अनुमति तुम्हें प्राप्त करनी होगी।" शकुनि ने दुर्योधन को समझाया।

द्रुपद उनका समर्थक बना। कृष्ण की बात बताने की कोई आवश्यकता ही न थी। वह पांडवों की रक्षा प्रारंभ से ही कर रहा है। खांडव वन का दहन करके अर्जुन अग्निदेव की सहायता से गांडीव, अक्षय तूणीर तथा अनेक दिव्य अस्त्र प्राप्त कर सका। उनकी मदद से ही उसने सभी राजाओं को जीता। उन्हें मय सभा प्राप्त हुई। इसमें अधर्म की बात क्या रही? फिर भी तुम याद रखो कि तुम्हारे पास जो चतुरंगी बल है, वह उन्हें कहाँ? तुम्हारे तो निन्यानवें भाई, महान धनुर्धारी द्रोण, समस्त अस्त्रों के ज्ञाता अश्वत्थामा, कर्ण, कृपाचार्य, मैं और ये सब तो हैं?"

दुर्योधन को साथ लेकर जब शकुनि धृतराष्ट्र के पास पहुँचा तब धृतराष्ट्र युधिष्ठिर के राजसूय-याग का समाचार सुनते बड़ा ही प्रसन्न हो रहा था। उसी समय शकुनि ने वहाँ पहुँच कर कहा–"महाराज, दुर्योधन बड़ा ही कमजोर हो गया है। उसके चेहरे का सारा तेज चला गया है।" ये बातें सुनकर धृतराष्ट्र चौंक पड़ा और दुर्योधन को निकट बुलाकर शरीर पर हाथ फेरते हुए बोला–"बेटा, तुम्हें कैसी तक़लीफ़ हुई? तुम तो बहुत ही कमज़ोर दिखाई देते हो।"

इस पर दुर्योधन ने समझाया–"मैं मानसिक बीमारी से परेशान हूँ। मुझे

नींद नहीं आती। खाने की इच्छा नहीं होती। अपने शत्रु का वैभव देख मुझे यह बीमारी हो गयी है।"

शकुनि ने दुर्योधन से कहा–"राजन, युधिष्ठिर को जुआ खेलने की बुरी लत है। मगर उसमें वे प्रवीण नहीं हैं। मैं जुए में प्रवीण हूँ। मैं अपनी युक्ति से जुए में युधिष्ठिर को हराकर उनकी सारी संपत्ति तुमको दिला सकता हूँ। युद्ध अथवा जुए में किसी राजा को निमंत्रण देने पर इनकार करना क्षत्रिय का धर्म नहीं है। इसलिए हमारे बुलाने पर युधिष्ठिर अवश्य स्वीकार करेंगे।"

तब दुर्योधन अपने पिता के चरणों पर गिर पड़ा और शकुनि के कहे मुताबिक़ करने की अनुमति मांगी। धृतराष्ट्र ने दुर्योधन से कहा–"हम विदुर की सलाह लेंगे। देखें, वह हमें क्या सलाह देता है?"

"विदुर से बताने पर वे किसी भी हालत में यह काम होने नहीं देंगे। यदि आप इसे मानेंगे नहीं तो मैं ज़िंदा नहीं रह सकता, इसके बाद आप और विदुर इस राज्य का शासन कीजिये।" दुर्योधन ने निराशा भरे स्वर में कहा।

धृतराष्ट्र अपने पुत्र को बहुत चाहता था, इसलिए वह दुर्योधन की इच्छा के विरुद्ध कुछ बोल नहीं पाया। उसने अनेक

शिल्पियों को बुला कर उन्हें आदेश दिया कि मय सभा जैसी एक सभा भवन का निर्माण करे और उसके एक हज़ार स्तम्भ तथा सौ दर्वाज़े हों, साथ ही तरह-तरह के चित्रों से भरा एक मंडप भी बनाया जाय। इसके बाद उसने विदुर को बुला भेजा। उससे उसने अपने मन की बात नहीं बतायी, बल्कि यही बताया कि युधिष्ठिर को जुआ खेलने निमंत्रण दिया जाय।

विदुर ने धृतराष्ट्र से कहा–"राजन, यह विचार गलत है। इसे मैं स्वीकार नहीं करता। जुएँ के कारण हमारे पुत्रों में नाहक़ दुश्मनी बढ़ेगी। आप यह विचार अपने मन से निकाल दीजिये।"

इस पर धृतराष्ट्र ने कहा–"विदुर इसमें चाहे भले-बुरे क्यों न हो, पर जुआ खेलना जरूरी है। हमारे पुत्रों के बीच यदि बैरभाव पैदा हो जाय तो उसे दूर करने के लिए मैं, तुम, भीष्म और द्रोण हम सब नहीं हैं? तुम इंद्रप्रस्थ जाओ और युधिष्ठिर को अपने साथ बुला आओ।"
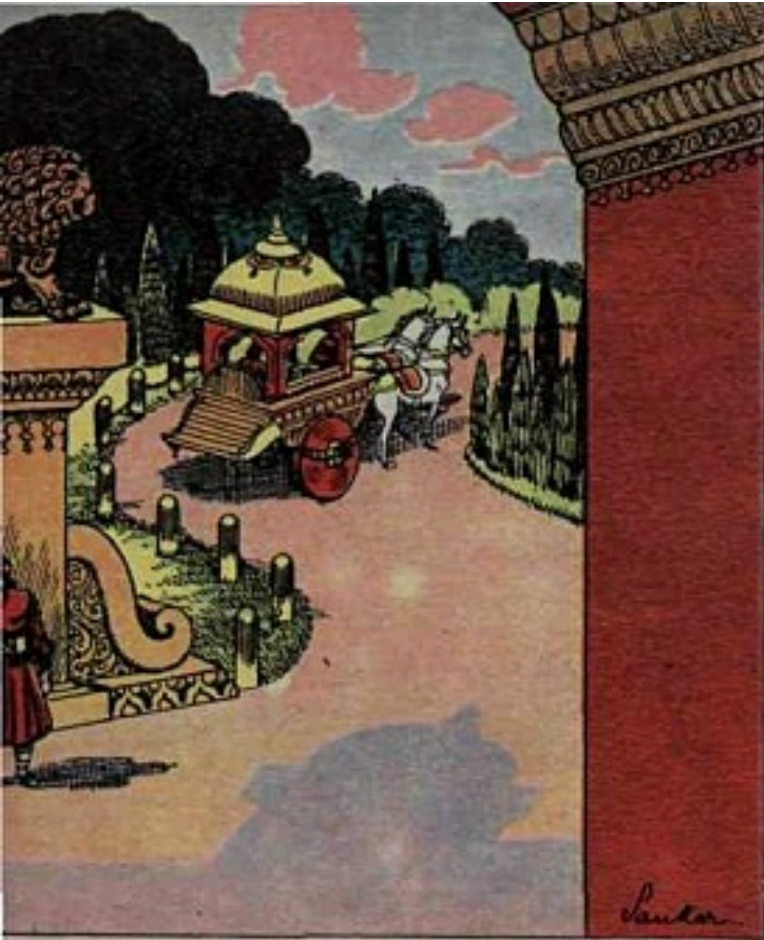
विदुर यह समाचार भीष्म को दे उनका विचार जानने के लिए चल पड़ा। विदुर के जाने पर धृतराष्ट्र ने अपने पुत्र को बुलाकर जुए का प्रयत्न बंद करने को समझाया। यह भी सलाह दी कि चाहे तो तुम भी राजसूय-यार्ग करके साम्राज्य की स्थापना करो, पर दुर्योधन मानने को तैयार न था। शकुनि ने समझाया कि जुआ भी एक तरह का युद्ध है, उसमें जिसकी कुशलता होगी, उसकी विजय होगी।

इस बीच में धृतराष्ट्र के आदेशानुसार हस्तिनापुर में एक सुंदर सभा भवन बनकर तैयार हुआ। तब धृतराष्ट्र ने विदुर को बुलाकर नये सभाभवन में स्नेहपूर्वक जुआ खेलने के लिए युधिष्ठिर को बुला लाने का आदेश दिया। अब विवश होकर विदुर रथ पर सवार हो इंद्रप्रस्थ की ओर चल पड़ा। युधिष्ठिर ने उचित रूप में सत्कार करके पूछा–"विदुर, कुशल हैं न? आप का चेहरा उतरा हुआ है, इसका क्या कारण है? धृतराष्ट्र, दुर्योधन आदि कुशल हैं न?"

उत्तर में विदुर ने कहा–"हाँ, सब लोग कुशल हैं। तुम्हारी मय सभा जैसी सभा का निर्माण हस्तिनापुर में भी हुआ है। उन लोगों ने कहला भेजा है कि उस भवन में तुम कुछ दिन तक आराम से बिताओ और उनके साथ स्नेहपूर्वक जुआ खेलो। बूढ़े राजा ने यह बात तुम से बताने को कहा है। तुम्हारे साथ जुआ खेलने पर ही उन्हें तथा उनके पुत्रों को सुख प्राप्त होगा। इसलिए तुम उन दुष्टों की इच्छा की पूर्ति करो।"

यह बात सुनकर युधिष्ठिर ने कहा– "ओह, क्या बड़े लोग जुआ खेलते हैं? इससे ज़रूर झगड़ा पैदा होगा। आप का क्या विचार है? आप जैसा कहेंगे, वैसा करूँगा।"

"मैंने उस अंधे राजा को समझाया कि जुआ झगड़े का कारण होता है, पर उसने मेरी बात नहीं मानी। तुमको बुला लाने भेजा है। तुम सोचकर जो उचित समझो वही करो।" विदुर ने युधिष्ठिर से कहा।

"वहाँ पर जुआ खेलने को उत्सुक कौन हैं?" युधिष्ठिर ने पूछा।

"शकुनि, विविंशती, चित्रसेन, सत्यव्रत, पुरमित्र तथा जय हैं।" विदुर ने जवाब दिया।

"ओह, सभी जुआखोर एक जगह इकट्ठे हो गये? मगर इससे खतरा पैदा होगा। बुजुर्गों ने बुला भेजा तो जाना ही होगा। मेरा यह नियम है कि कोई जुआ खेलने के लिए निमंत्रण दे तो जाना ही है। मुझे वैसे डर लगता है। मगर चाहे जो हो जाय, कल रवाना होंगे।" युधिष्ठिर ने अपना निर्णय सुनाया।

यात्रा की तैयारी होने लगी। युधिष्ठिर अपने भाइयों तथा द्रौपदी को साथ ले हस्तिनापुर आ पहुँचे। धृतराष्ट्र, भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा इत्यादि बुजुर्गों को युधिष्ठिर ने नमस्कार किया। छोटों से कुशल-प्रश्न पूछे, गांधारी का परामर्श किया। द्रौपदी के चेहरे पर महारानी के लक्षण देख दुर्योधन इत्यादि की पत्नियाँ ईर्ष्या से जल उठीं।

दूसरे दिन प्रातःकाल युधिष्ठिर कालकृत्यों से निवृत्त हो शकुनि, दुर्योधन, दुश्शासन इत्यादि के निवास तक पहुँचे। बड़ों को प्रणाम किया।

तब शकुनि ने युधिष्ठिर से कहा– "राजन, आपको देखने कुछ लोग इस सभा-भवन में आये हुए हैं। कुछ लोग अपना समय काटने के लिए आप से जुआ खेलने आये हैं, इसलिए हम लोग पहले

कुछ नियम बना कर इन पाँसों से जुआ शुरू करेंगे।"

युधिष्ठिर ने कहा–"शकुनिजी, जुए में धोखा देना पाप है। उसमें क्षत्रिय की कुशलता प्रकट नहीं होती। इसलिए धोखे से जुए में हमें हराने का प्रयत्न न करो। हमने जो कुछ धन पाया, उसे ब्राह्मणों की रक्षा तथा दुष्टों को दण्ड देने के काम में लगा रहे हैं। इसलिए तुम उस धन को धोखे से जीतने की कोशिश मत करो।"

"वेदों के अध्ययन में समर्थ पंडित दूसरे पंडित को वेदाध्ययन में ही पराजित करता है। इसी प्रकार धोखा देनेवाले जुएखोर को धोखे से ही जीतना होगा। अगर यह शर्त आपको पसंद न हो तो आप जुआ खेलना बंद कर दीजिये।" शकुनि ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

युधिष्ठिर का पौरुष जाग उठा। उन्होंने कहा–"जुए में निमंत्रित हो मैं यहाँ पर आया, वापस लौट जाना अपमान की बात है। इसलिए मैं जरूर जुआ खेलूंगा। बताओ, मेरे साथ कौन जुआ खेलनेवाला है?" दुर्योधन ने कहा।

"मेरी ओर से मेरे फूफे शकुनि जुआ खेलेंगे। वे जो भी दाँव लगायेंगे, मैं दूंगा।" दुर्योधन ने चुनौती दी।

"मैंने यह बात कभी नहीं सुनी कि एक की ओर से दूसरा जुआ खेले। और न मैंने देखा भी है। यह तो विचित्र बात है। फिर भी तुम लोग अपनी इच्छा के अनुसार ही करो।" युधिष्ठिर ने कहा।

जुआ देखने के लिए धृतराष्ट्र ने अपने साथ भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, विदुर इत्यादि को बुला भेजा। सब लोग आकर अपने अपने आसनों पर विराजमान हो गये।

पहले दाँव में युधिष्ठिर ने अपने हार के मणि को लगाया तो दुर्योधन ने अपने सारे रत्नों को दाँव पर लगाया। पहला दाँव युधिष्ठिर हार गया। तब से लेकर युधिष्ठिर के हर दाँव को शकुनि जीतता गया। जुए में हारते युधिष्ठिर का मत्सर

भी बढ़ता गया। उन्होंने सोना, घोड़े, रथ, दास-दासियों, तथा अपूर्व निधियों को दाँव पर लगाया, पर सब खो बैठे।

इस अन्याय को देख विदुर सहन नहीं कर पाया। उसने धृतराष्ट्र से कहा– "कहा जाता है कि मरनेवाले को अच्छी दवाएँ रुचती नहीं, वैसे ही हमारी बातें आपको नहीं रुचतीं। तुम्हारा पुत्र हमारा वंश डुबोने के लिए पैदा हुआ है। तुम भी इस जुए का इंतजाम करके पांडवों के धन का अपहरण कर रहे हो। इससे तुम्हारी बड़ी हानि होगी। मेरी बात सुनो, पांडवों के क्रोध को उबलने न दो। तुम पांडवों के धन को हड़प कर खुश हो रहे हो, कल तुमको उनके क्रोध का शिकार होना पड़ेगा। निश्चय ही तुम लोगों का विनाश होगा। इसलिए अब ही सही, यह जुआ बंद करवा दो।"

धृतराष्ट्र ने विदुर की बातों की परवाह न की। मगर दुर्योधन ने विदुर को खरी-खोटी सुनायीं। उसकी निंदा भी की।

इस बीच युधिष्ठिर अपना सर्वस्व खो बैठे। अपने राज्य, प्रजा, सामंत आदि को दाँव पर रखा, सबको हार बैठे। शकुनि ने पांसों को युधिष्ठिर के आगे फेंक कर कहा–"युधिष्ठिर, दाँव पर लगाने को आप के पास कुछ भी नहीं बचा रहा।"

युधिष्ठिर ने क्रोध में आकर सहदेव तथा नकुल को दाँव पर रखा और खो बैठे। इसके बाद अर्जुन व भीम को दाँव पर लगाया, हार कर अंत में अपने को दाँव पर रखा, वे भी हार बैठे। [मुख पृष्ठ का चित्र]

"आप की संपत्ति द्रौपदी बच रही। उसको भी दाँव पर लगाइये।" शकुनि ने कहा। युधिष्ठिर ने द्रौपदी को भी दाँव पर लगाया। इस घटना से सारी सभा में कोलाहल पैदा हुआ। कुछ लोगों ने कहा कि अब कौरवों के विनाश का समय निकट आया है। भीष्म, द्रोण व कृपाचार्य मौन रह गये। विदुर के क्रोध की सीमा न रही। पर कर्ण और दुश्शासन की खुशी का ठिकाना न रहा।

# शिवपुराण

सृष्टि के पूर्व सारा विश्व जलमय था। पदार्थ से शून्य रहकर अंधकार से भरा था, तब उस जल में से एक महान तेज पैदा हुआ। कालक्रम में वही ज्योतिर्लिंग रूप को प्राप्त हुआ। वही परमेश्वर परम शिव है। उस ज्योतिर्लिंग के अर्ध भाग से एक महाशक्ति पैदा हुई। उसी महाशक्ति को प्रकृति और महामाया नाम से पुकारते हैं।

कालक्रम में परमेश्वरी और परमेश्वर ने महाविष्णु की सृष्टि की। महाविष्णु की नाभि से महापद्म पैदा हुआ। वह कई कोसों लंबा था और देखने में आश्चर्यजनक था। उस महापद्म में से ब्रह्मा पाँच मुखों के साथ पैदा हुए। ब्रह्मा के साथ सरस्वती का भी जन्म हुआ।

ब्रह्मा ने देखा कि सारा संसार जल से भरा है। इसलिए उनके मन में अपने जन्मस्थानवाले महापद्म का पता लगाने की इच्छा पैदा हुई। तब ब्रह्मा ऊर्ध्व तथा अधो लोकों के बीच यात्रा करके महापद्म के गर्भ में पहुँचे। ब्रह्मा ने ओंकार का जप किया जिससे विष्णु उनके सामने प्रत्यक्ष हुए। ब्रह्मा यह मान रहे थे कि वे ही सृष्टि के प्रथम व्यक्ति हैं, इसलिए विष्णु को देख उन्होंने पूछा—"आप कौन हैं? यहाँ पर क्यों आये हैं?"

"सृष्टि का प्रारंभ करने के लिए मैंने तुमको अपनी नाभि के कमल से पैदा किया है। मेरा नाम विष्णु है?" विष्णु ने उत्तर दिया।

ब्रह्मा का अहंकार जाग उठा। वे बोले—"आप डींग मारना बंद कीजिये, नहीं तो मेरे साथ युद्ध करने के लिए तैयार हो जाइये। मैं स्वयंभू हूँ। इस जगत का कर्ता हूँ।"

अंतिम पृष्ठ का चित्र

इस पर विष्णु ने ध्यान किया, तो परमेश्वर ज्वालालिंग के रूप में ब्रह्मा और विष्णु के बीच प्रत्यक्ष हुए। तब विष्णु ने ब्रह्मा से कहा–"हम दोनों में इस ज्वालालिंग के आदि और अंत का जो पता लगा सकेंगे, वे ही बड़े हैं।" इस शर्त को ब्रह्मा ने मान लिया। मगर दोनों हार कर अपने स्थान को लौट आये और परमेश्वर की प्रार्थना करने लगे।

परमेश्वर ने प्रत्यक्ष होकर ब्रह्मा से कहा–"तुम पंचभूतोंवाले विश्व की सृष्टि करने के लिए इस विष्णु के नाभि-कमल से पैदा किये गये हो। इसलिए तुम सृष्टि का प्रारंभ करो।"

ब्रह्मा ने परमेश्वर को देख पूछा–"तुम कौन हो? मेरे बराबर तुम्हारे भी पाँच मुख किसलिये हैं? मैं सृष्टिकर्ता हूँ, इसलिए मेरे पाँच मुखों का होना सहज है।"

ब्रह्मा की बातें सुनकर परमेश्वर ने रुद्रावतार धारण किया, अपने बायें हाथ की कनिष्ठिका उंगली के नाखून को तलवार के रूप में प्रयोग करके ब्रह्मा के एक सर को काट डाला। इस पर ब्रह्मा का घमण्ड जाता रहा और उन्होंने परमेश्वर से रक्षा करने की प्रार्थना की।

परमेश्वर ने शांत रूप धारण कर कहा–"हे ब्रह्मा, तुम सृष्टि करने के लिए और विष्णु तुम्हारी सृष्टि की रक्षा करने के लिए पैदा किये गये हो। मैं लयकारक शिव, रुद्र और ईश्वर के नाम से पुकारा जाऊँगा। तुम लोग ज्वालालिंग की पार्थिवलिंग या शिवलिंग मानकर पूजा करो।" तब परमेश्वर ज्वालालिंग में विलीन हो गये।

इसके बाद ब्रह्मा विष्णु से वेद इत्यादि लेकर पद्मासन लगाये ओंकार जपने लगे। तब पानी पर गिरते एक अण्डा ब्रह्मा की ओर आया। उसी समय अंडे में से 'ओं' शब्द फूट पड़ा। वह शब्द जिस मार्ग से निकला था, उसी मार्ग से ब्रह्मा ने भीतर प्रवेश किया। उसके भीतर गाढ़ा अंधकार फैला था। ब्रह्मा वहाँ पर अपने शरीर को

छोड़कर चतुर्मुख के रूप में फिर पैदा हुए। ब्रह्मा जब अण्डे से बाहर निकले, तब अण्डा दो भागों में फट गया। उसका निचला भाग भूमि के रूप में तथा ऊपर का भाग आसमान के रूप में बदल गया। सारा जल सूख गया।

इस दृश्य को देख ब्रह्मा बहुत खुश हुए और पृथ्वी पर सभी प्रकार के चर और अचर की सृष्टि करने लगे। ब्रह्मा ने सबसे पहले सनकसनंदन इत्यादि की सृष्टि की। उनके मन में सृष्टि करने की इच्छा न रही, इसलिए वे परमेश्वर का ध्यान करते तपस्या करने चले गये। इसे देख ब्रह्मा जोर से रो पड़े। उनके आँसू पृथ्वी पर गिर पड़े, तब उन आँसुओं में महान तेज के साथ शिव का जन्म हुआ। शिवजी सफ़ेद थे और दशों दिशाओं को प्रकाश देने लगे। तब ब्रह्मा ने उनसे पूछा—"तुम कौन हो?"

"मैं शिव हूँ, रुद्र हूँ।" शिवजी ने उत्तर दिया। तब विष्णु ने प्रत्यक्ष होकर कहा—"हे ब्रह्मा, तुम जो सृष्टि करते हो और मैं जिसका पोषण करता हूँ, उसका लय करने के लिए परमेश्वर इस प्रकार शिव के रूप में पैदा हुए हैं।"

तदनंतर ब्रह्मा के लिए सत्यलोक, विष्णु के लिए वैकुण्ठ और शिवजी के लिए कैलास

निवास बने। इसलिए ब्रह्मा सत्यलोक में गये। अपनी सहायता के लिए मरीचि, कश्यप, दक्ष, गौतम, वसिष्ठ, कर्दम इत्यादि नौ उप ब्रह्माओं की सृष्टि की। उनमें दक्ष के चौंसठ पुत्रियाँ हुईं। उनमें से दस कन्याओं के साथ कश्यप ने विवाह किया और उसके बच्चे हुए। अदिति के इन्द्र इत्यादि देवता पैदा हुए। दिति के दैत्य पैदा हुए। विनता के गरुड़ और अनूर, कद्रुवा के सर्प तथा स्वस के यक्ष और राक्षस पैदा हुए।

शिवजी के साथ विवाह करने के लिए महेश्वरी ने दक्ष के सती नामक कन्या के रूप में जन्म लिया। उनके विवाह के

समय ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र वगैरह् देवता आये और सती तथा शिव का अनेक प्रकार से स्त्रोत्र किया। अतिथियों का सत्कार करने के लिए शिवजी ने नंदीश्वर और कालभैरव को नियुक्त किया और वे सती के साथ कैलास में जाकर सुखपूर्वक रहने लगे।

कुछ समय बीता। कई महानुभावों ने प्रयाग नगर में बहुत बड़ा याग करना चाहा। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, इन्द्र आदि देवताओं तथा अन्य लोकों के निवासियों को निमंत्रित कर याग प्रारंभ किया।

याग में भाग लेने आनेवालों के ठहरने का उचित प्रबंध किया गया और उनको उचित आसनों पर बिठाया गया। सब लोग अपने अपने स्थान पर बैठे यज्ञ देख रहे थे, तब दक्ष अपने शिष्यों के साथ आ पहुँचा। सभा में उपस्थित सभी लोग उठ खड़े हुए और आगे बढ़कर उसका स्वागत किया। दक्ष ने चारों तरफ़ देखा, ब्रह्मा और विष्णु को नमस्कार किया। उसने देखा कि उसका दामाद शिव ने खड़े होकर परामर्श नहीं किया, इस पर उसने कहा– "आप सबने आगे बढ़कर मेरा आदर किया, पर ईश्वर मेरा दामाद है, इस कारण मेरा परामर्श न करके उसने मेरी उपेक्षा की। यह बड़ों का आदर करना तक नहीं जानता।" ये शब्द कहकर अपने शिष्यों के साथ जाने लगा।

इस पर ब्रह्मा, विष्णु, वगैरह् ने दक्ष को रोक कर समझाया–"ये ईश्वर हैं। परमेश्वर के अवतार-पुरुष हैं। उनका आदर तुमको करना चाहिये, उनकी निंदा नहीं करनी चाहिये। यह गलत है।"

तब नंदी ने दक्ष को शाप दिया–"हे दक्ष, तुमने शिवजी की निंदा की। तुम्हारा सर कटकर यज्ञ-कुण्ड में गिर जाय।"

इस पर दक्ष ने भी क्रुद्ध हो शाप दिया-- "तुम रुद्रगण वेदों से दूर हो, राख मलकर पाखण्डी कहलाओगे।"

इसके बाद शिवजी यज्ञ के समाप्त होने तक वहीं रहकर अपने रुद्रगणों को साथ ले कैलास की ओर चले गये।
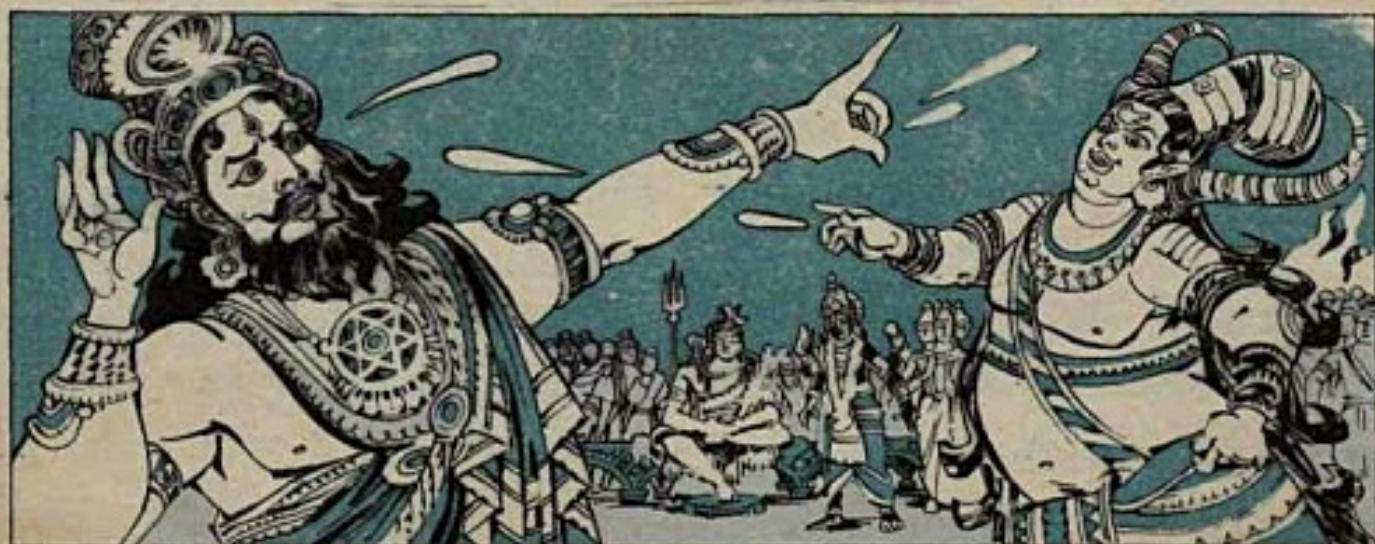
# ११०. 'रोटियों की तहों' की शिलाएँ

लगभग पाँच करोड़ साल पूर्व समुद्र के तल में चूने की धूल जमते जमते कालांतर में समुद्र के स्तर को पार कर बाहर आ गयी। वर्षा के पानी ने कमजोर पदार्थ को गलाया, जिससे इस प्रकार की तहें जम गयीं। इस चित्र में दर्शित "रोटियों की तहों" की शिलाएँ न्यूजीलैण्ड के दक्षिणी टापू में हैं। इस प्रकार की शिलाओं की तहें दुनिया के और प्रदेशों में भी हैं, इन तहों के बीच समुद्र के पानी ने गुफाएँ बना रखी है।